

छमाही हिंदी गृह पत्रिका

ऑयल इंडिया  
OIL INDIA

# ऑयल किरण

अइल किरण OIL KIRAN | 2025 | वर्ष 21 अंक 35 |



## पत्रिका प्रबंधकीय मंडल

### मुख्य संरक्षक

श्री विनयानन्द भराली  
आवासी मुख्य कार्यपालक  
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

### संरक्षक

श्री माधुर्ज्य बरुआ  
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं क्षेत्र प्रशासन)  
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

श्री दिगंत कुमार बोरा  
मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क)  
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

### संपादक

श्री दिगंत डेका  
वरिष्ठ अधिकारी (राजभाषा)  
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

### संपादक मंडल

डॉ. रमणजी झा  
महाप्रबंधक (राजभाषा)  
ऑयल, निर्गमित कार्यालय, नोएडा

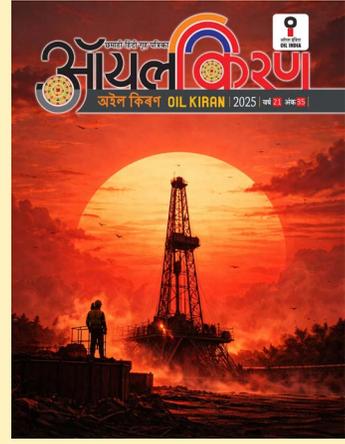
डॉ. विजय मोहन बरेजा  
महाप्रबंधक (राजभाषा)  
ऑयल, कोलकाता कार्यालय, कोलकाता

श्री हरेकृष्ण बर्मन  
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)  
ऑयल, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी

डॉ. शैलेश त्रिपाठी  
प्रबंधक (मा. सं. एवं प्रशा. - राजभाषा)  
ऑयल, राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर

### संपादकीय कार्यालय :

राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग  
ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय  
डाकघर : दुलियाजान - 786602, जिला : डिब्रूगढ़ (असम)  
ई-मेल : hindi\_section@oilindia.in



## ऑयल किरण

वर्ष-21, अंक-35

## इस अंक में...

विश्व योग दिवस पर विशेष	7
राजस्थान बेसिन में OALP और DSF के अंतर्गत...	10
गांवों में वीरान होते घर: ...	12
आतंकवाद: एक वैश्विक समस्या	13
महाकुंभ (2025) और मेरा अनुभव	14
भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में व्यावसायिक...	16
गणित ज्ञान का संगीत है	21
सोशल मीडिया और अनसोशल युवा	23
वर्षावन की एक स्मृति: दीहिंग पटकाई ...	24
कम्फर्टजोन	25
आयुर्वेद, प्रकृति और योग- स्वस्थ जीवन के आधार	26
भारत में पेट्रोलियम क्षेत्र का भविष्य	27
विश्व पर्यावरण दिवस 2025	30
सिंगापुर: अनुशासन, नवाचार और सांस्कृतिक संगम का पथ	31
राजभाषा हिन्दी: विकास यात्रा और वर्तमान प्रासंगिकता	33
भ्रष्टाचार : राष्ट्रके विकास में एक बाधा	35
अंतर्दर्शन	37
नरगिस के फूल	37
माँ	38
मैं	38
ये खाली गलियां	39
बोहाग (बैशाख) में दुलियाजान	39
हिंदी भाषा	39
ऑयल राजभाषा समाचार	36-43

पत्रिका में प्रकाशित लेखों, रचनाओं आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। ऑयल राजभाषा अनुभाग तथा सम्पादक का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

निःशुल्क एवं आंतरिक विरतण हेतु प्रकाशित।

मुद्रक - दुलियाजान प्रिंटिंग वर्क्स, दुलियाजान, दूरभाष - 94350 38552



## शुभकामना संदेश

श्री विनयानन्द भराली

आवासी मुख्य कार्यपालक  
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान  
ऑयल इंडिया लिमिटेड

प्रिय ऑयल इंडियंस,

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि ऑयल इंडिया लिमिटेड की एकमात्र छमाही हिन्दी गृह पत्रिका 'ऑयल किरण' के नए अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

'ऑयल किरण' पत्रिका का प्रत्येक अंक हमारे संगठन के भीतर साहित्यिक रुचि, भाषा प्रेम तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। यह मंच कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों को अपनी भावनाओं, अनुभवों और विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है, जिससे संगठन में सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण होता है।

इस पत्रिका के माध्यम से हिन्दी भाषा का प्रयोग और प्रसार केवल औपचारिकता न रहकर एक जीवंत संस्कृति के रूप में उभर रहा है। यह राजभाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ हमारे देश की भाषाई एकता को भी मजबूती प्रदान करता है।

मैं 'ऑयल किरण' की संपादकीय टीम को इस उत्तम प्रयास के लिए साधुवाद देता हूँ तथा सभी रचनाकारों को उनकी उत्कृष्ट रचनाओं के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

सादर,

वि भराली

(विनयानन्द भराली)



## शुभकामना संदेश

श्री माधुर्ज्य बरुआ

कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं क्षेत्र प्रशासन)  
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति,  
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान, ऑयल इंडिया लिमिटेड

ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा प्रकाशित होने वाली 'ऑयल किरण' का यह नवीनतम अंक हमारे अधिकारियों, कर्मचारियों तथा उनके परिजनों की साहित्यिक अभिव्यक्ति और रचनात्मक प्रतिभा का सजीव दस्तावेज़ है। यह पत्रिका सिर्फ एक प्रकाशन नहीं, बल्कि ऑयल परिवार की सामूहिक सृजनात्मकता, भावनाओं और विचारों का जीवंत प्रतिबिंब है।

हिंदी न केवल एक भाषा है, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान का आधार भी है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि 'ऑयल किरण' के माध्यम से न केवल साहित्यिक अभिरुचि को प्रोत्साहन मिल रहा है, बल्कि कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को भी बल मिल रहा है, जो राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन में सहायक है।

मैं इस अंक से जुड़े सभी रचनाकारों, संपादकीय टीम और पाठकों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ। आशा करता हूँ कि यह पत्रिका आने वाले समय में और अधिक ऊँचाइयों को छुएगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(माधुर्ज्य बरुआ)



ऑयल इंडिया  
**OIL INDIA**



## शुभकामना संदेश

श्री दिगंत कुमार बोरा

मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क)  
ऑयल इंडिया लिमिटेड  
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

यह अत्यंत गर्व एवं हर्ष की बात है कि हमारी कंपनी की गृह पत्रिका 'ऑयल किरण' का नवीनतम अंक प्रकाशित होने जा रहा है।

'ऑयल किरण' का यह नवीन अंक ऑयल परिवार के बौद्धिक उत्कर्ष और सामाजिक-सांस्कृतिक सरोकारों का सशक्त प्रमाण है। यह पत्रिका केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि कर्मचारियों एवं उनके परिजनों के भीतर निहित संवेदनशीलता, वैचारिक विविधता और भाषाई समर्पण को उजागर करने का एक प्रेरणादायक मंच भी है।

ऐसे साहित्यिक प्रयास संस्थान में एक जीवंत और सृजनशील वातावरण का निर्माण करते हैं। साथ ही, हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं इसके प्रयोग को सहज और स्वाभाविक बनाकर राजभाषा नीति के लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होते हैं।

मैं इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय दल को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा सभी रचनाकारों को उनकी उत्कृष्ट साहित्यिक सहभागिता के लिए अभिनंदन ज्ञापित करता हूँ। आशा करता हूँ कि 'ऑयल किरण' आने वाले वर्षों में भी इसी उत्साह और नवाचार के साथ आगे बढ़ती रहेगी।

धन्यवाद और शुभकामनाएं!

दिगंत कुमार बोरा

(दिगंत कुमार बोरा)



श्री दिगंत डेका

# संपादकीय



सादर वंदना

‘ऑयल किरण’ के इस नवीनतम अंक (वर्ष 21, अंक 35) को आपके करकमलों में सौंपते हुए मैं अत्यंत हर्ष और गर्व की अनुभूति कर रहा हूँ। यह छमाही हिंदी गृह पत्रिका केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि ऑयल परिवार के सामूहिक सृजन, संवेदना और संवाद का एक जीवंत मंच है, जहाँ भावनाएं शब्द बनती हैं, अनुभव अभिव्यक्ति पाते हैं और विचार साहित्य का आकार लेते हैं।

हमारे इस विशेषांक में निहित लेख, कविताएं, संस्मरण, लघुकथाएं और अन्य रचनाएं दर्शाती हैं कि हमारी संस्था में कार्यरत अधिकारी, कर्मचारी एवं उनके परिजन केवल तकनीकी या प्रशासनिक क्षेत्र में ही दक्ष नहीं, अपितु संवेदना, अभिव्यक्ति और विचारों की दृष्टि से भी अत्यंत समृद्ध हैं। उनकी लेखनी में अनुभव की परिपक्वता, भावों की गहराई और भाषा के प्रति आत्मीयता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।

‘ऑयल किरण’ सदैव से ही हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन में एक सशक्त माध्यम रही है। इस पत्रिका के माध्यम से न केवल हिंदी के साहित्यिक स्वरूप को मंच मिलता है, बल्कि कार्यालयीन वातावरण में हिंदी के सहज प्रयोग को भी बल मिलता है। हम यह मानते हैं कि राजभाषा का संवर्धन केवल नियमों के पालन से नहीं, बल्कि हृदय से स्वीकार्यता और व्यवहार में उपयोग से संभव है, और यही भावना इस पत्रिका की प्रेरणा है।

इस पत्रिका की विशेषता यह है कि इसमें कंपनी के विभिन्न कार्य क्षेत्रों से प्राप्त रचनाएं सम्मिलित हैं, जिससे ‘ऑयल किरण’ वास्तव में ऑयल परिवार की समन्वित भावनाओं की अभिव्यक्ति बन जाती है। यह विविधता में एकता की भावना को प्रकट करता है और हमारे संगठन की राष्ट्रीय पहचान को सुदृढ़ करता है।

मैं इस अवसर पर उन सभी रचनाकारों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच समय निकालकर इस साहित्यिक यात्रा को समृद्ध किया। साथ ही, संपादकीय टीम को भी साधुवाद, जिन्होंने इस अंक को संयोजित करने में परिश्रमपूर्वक कार्य किया।

अंत में, मैं सभी पाठकों से आग्रह करता हूँ कि वे ‘ऑयल किरण’ को केवल एक पत्रिका न मानें, बल्कि इसे आत्म-अभिव्यक्ति, भाषा प्रेम और संस्थागत एकता के उत्सव के रूप में अपनाएं। साथ ही पाठकों से निवेदन है कि वे इस पत्रिका को पढ़ें, सराहें और अपने सुझाव देकर इसे और बेहतर बनाने में योगदान दें। आप सभी के सुझाव एवं रचनात्मक सहभागिता ही इस प्रयास को निरंतर प्रासंगिक एवं प्रेरणादायक बनाए रखते हैं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(दिगंत डेका)

वरिष्ठ अधिकारी (राजभाषा)  
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

## विश्व योग दिवस पर विशेष

डॉ. अमित राठी (पी टी)  
वरिष्ठ फिजियोथेरेपिस्ट  
चिकित्सा सेवाएँ, दुलियाजान

**"भागदौड़ भरी ज़िंदगी में हम हर पल स्क्रीन में डूबे रहते हैं, जिससे शरीर थक जाता है और मन उलझ जाता है। पढ़िए, कैसे योग हमें इस स्थिति से बचा सकता है।"**

**डिजिटल डिटॉक्स...** अगर आप लंबे समय तक स्क्रीन देखते हैं, तो ये 6 योगासन आपकी सेहत के लिए वरदान हैं।

"भारतीय इंटरनेट यूजर्स औसतन रोज 7.3 घंटे स्क्रीन पर बिताते हैं। डिजिटल ओवरयूज से चिंता, नींद में कमी और 'डिजिटल डिप्रेशन' जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं।

जानिए 6 ऐसे योग जो स्क्रीन देखने से होने वाले तनाव को घटा सकते हैं।"

- 1. भ्रामरी प्राणायाम** - भ्रामरी प्राणायाम एक अत्यंत शांतिदायक और प्रभावशाली प्राणायाम है, जिसमें मधुमक्खी जैसी गुंजन ध्वनि की जाती है। यह प्राणायाम मन को शांत करने, तनाव को दूर करने और ध्यान केंद्रित करने में अत्यंत सहायक होता है। "भ्रामरी" शब्द संस्कृत के "भ्रमर" से आया है, जिसका अर्थ होता है "मधुमक्खी"। भ्रामरी प्राणायाम करने की विधि - सुखासन, पद्मासन या किसी आरामदायक स्थिति में बैठ जाएं। आंखें बंद कर लें और शरीर को ढीला छोड़ दें। दोनों हाथों की तर्जनी उंगलियों से कानों को बंद करें (या कान के अंदर ट्रैगस को हल्का दबाएं)। गहरी सांस लें और फिर "हम्मम्म..." जैसी मधुमक्खी की आवाज़ निकालते हुए धीरे-धीरे सांस छोड़ें। यह प्रक्रिया 5-10 बार दोहराएं।



**भ्रामरी प्राणायाम के लाभ** - मानसिक तनाव और चिंता को दूर करता है। मस्तिष्क को शांति और स्थिरता देता है। अनिद्रा

की समस्या में लाभकारी, रक्तचाप को नियंत्रित करने में सहायक, एकाग्रता और स्मरण शक्ति बढ़ाता है। माइग्रेन और सिरदर्द में राहत दिलाता है।

**सावधानियाँ** - बहुत तेज़ आवाज़ न करें, ध्वनि को कोमल और संतुलित रखें। अस्थमा या किसी गंभीर फेफड़ों की बीमारी में डॉक्टर की सलाह लें। हाइपरटेंशन (उच्च रक्तचाप) वाले व्यक्ति इसे ध्यानपूर्वक करें।

- 2. त्राटक** - त्राटक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ होता है "एकाग्रता से दृष्टि का एक बिंदु पर स्थिर होना"। इसे व्यायाम की श्रेणी में इसलिए "त्राटक व्यायाम" भी कहा जाता है कि यह आँखों की मांसपेशियों व नर्वस सिस्टम को सशक्त बनाता है।

**त्राटक करने की विधि -**

**स्थान व समय** - एकदम शांत और सुव्यवस्थित स्थान चुनें। दिन में किसी भी समय कर सकते हैं, पर सूर्योदय या सूर्यास्त के समय करना विशेष फायदेमंद होता है।

**तैयारी** - सुखासन, पद्मासन या पद्म मुद्रा में बैठ जाएं। रीढ़ सीधी रखें, दोनों हाथ घुटनों पर आराम से रखें। शरीर व मन को स्थिर कर लें, आँखें बंद करके गहरी साँस लें-छोड़ें।

**त्राटक अभ्यास** - आँख खोलकर, सामने रखे किसी स्थिर वस्तु (मोमेबत्ती की लौ, दीवार पर निशान या छोटा सा बिंदु) पर अपनी



दृष्टि स्थिर कर लें। बिना पलकें झपकाए जितना समय हो सके उतनी देर तक उसी बिंदु को घूरें। जब आँखें जलने या पलकें झपकाने का मन करे, तो बन्द आँखों से वही आभासी बिंदु (मन में देखना) केंद्रित करें। इस प्रकार खुली और बंद आँखों दोनों अवस्था में ध्यान रखें। प्रारंभ में 30 सेकंड से 1 मिनट तक करें, धीरे-धीरे समय बढ़ाकर 5-10 मिनट तक ले जा तराल व पुनः गति - 1-2 मिनट आराम करें, आँखे बन्द रखें और धीमी साँस लें जाएँ। फिर से ऊपर का चक्र दोहराएँ कुल 2-3 चक्र करें।

**त्राटक के लाभ** - आँखों की थकान और सूखापन दूर करता है। दृष्टि सुधारने में सहायक, धुंधली दृष्टि में लाभदायक, एकाग्रता व मेमोरी पावर बढ़ाता है। मानसिक तनाव कम करता है। तीव्र बुद्धि व रचनात्मकता को उभारता है।

**सावधानियाँ** - किसी भी गंभीर नेत्र विकार (जैसे मोतियाबिंद, ग्लूकोमा) में पहले नेत्र विशेषज्ञ से परामर्श लें। यदि आँखों में तेज जलन या दर्द हो, तो तुरंत अभ्यास बंद करें। शुरुआत में धीरे-धीरे समय बढ़ाएँ; अत्यधिक दबाव न डालें।

3. **उष्ट्रासन** - उष्ट्रासन शब्द संस्कृत के "उष्ट्र" (ऊँट) और "आसन" (मुद्रा) से बना है। यह एक पीछे झुकने वाला योगासन है, जिसमें शरीर की आकृति ऊँट जैसी बनती है। यह आसन रीढ़ की हड्डी को लचीला बनाता है और मानसिक थकान को दूर करता है।

**उष्ट्रासन करने की विधि** - वज्रासन में बैठें और फिर घुटनों के बल खड़े हो जाएँ (जैसे टांगों पर बैठना)। दोनों घुटनों को कंधों की चौड़ाई जितना खोलें और पैरों को पीछे सीधा रखें। हाथों को कमर पर रखें, अंगूठे नीचे और उंगलियाँ ऊपर की ओर हों। धीरे-धीरे साँस लेते हुए छाती को आगे और ऊपर की ओर उठाएँ। पीछे की ओर झुकें और एक-एक करके दोनों हाथों से एड़ियों को पकड़ें। गर्दन को भी पीछे की ओर ढीला छोड़ दें। 30 सेकंड से 1 मिनट तक इस स्थिति में रहें। धीरे-धीरे हाथों को कमर पर लाएँ और शरीर को सीधा कर लें।



**उष्ट्रासन के लाभ** - रीढ़ की हड्डी को लचीलापन देता है। पीठ दर्द और कंधे के तनाव को कम करता है। फेफड़ों की कार्यक्षमता बढ़ाता है। पाचन तंत्र को सक्रिय करता है। थायरॉयड ग्रंथि को उत्तेजित करता है। मानसिक थकान, चिंता और डिप्रेशन से राहत देता है।

**सावधानियाँ** - कमर दर्द वाले लोग इसे डॉक्टर की सलाह से करें। शुरु में प्रशिक्षक की देखरेख में अभ्यास करें। बहुत अधिक पीछे न झुकें अगर असहजता हो।

4. **विपरीत करनी योग (अर्द्ध सर्वांगासन)** - विपरीत करनी एक सरल और अत्यंत लाभकारी योग मुद्रा है, जिसमें शरीर का रक्त प्रवाह विपरीत दिशा में होता है — यानी पैरों को ऊपर और सिर को नीचे रखा जाता है। यह "legs-up-the-wall pose" के रूप में भी जाना जाता है।

**विपरीत करनी करने की विधि** -

**वॉल सपोर्ट के साथ (Beginners के लिए सरल तरीका):** दीवार के पास चटाई बिछाएं और एक ओर लेट जाएँ। धीरे-धीरे दोनों पैरों को ऊपर उठाएं और दीवार से टिकाएँ। पीठ जमीन पर और हाथ शरीर के पास रखें, हथेलियाँ ऊपर की ओर। आंखें बंद कर लें और सामान्य गहरी साँस लें। इस स्थिति में 5-15 मिनट तक रहें। धीरे-धीरे पैरों को मोड़ते हुए बाईं ओर करवट लेकर उठें।

**बिना दीवार के (Intermediate/Advanced):** - पीठ के बल लेट जाएँ। दोनों पैरों को धीरे-धीरे ऊपर उठाएँ (लगभग 90 डिग्री)। हथेलियों को कमर के नीचे लगाकर शरीर को सहारा दें। कोहनियों का सहारा लेते हुए शरीर को उठाएं और पैरों को सीधा रखें। 30 सेकंड से 2 मिनट तक इस स्थिति में रहें। धीरे-धीरे पीठ और पैर नीचे लाएं।

**विपरीत करनी के लाभ** - पैरों की सूजन और थकावट दूर करता है। रक्त संचार बेहतर करता है। रीढ़ और पीठ को आराम देता है। नींद की गुणवत्ता बढ़ाता है (अनिद्रा में लाभदायक)। तनाव, चिंता और मानसिक थकान को दूर करता है। पाचन और हार्मोनल संतुलन में सहायक होता है।

**सावधानियाँ** - उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, या आंखों की समस्याओं (ग्लूकोमा) में सावधानी से करें। पीरियड्स के दौरान इससे बचें। गर्दन में तकिया या कंबल लगाकर सहारा दिया जा सकता है।



5. **अंजलि मुद्रा (नमस्कार मुद्रा)** - अंजलि मुद्रा योग की एक अत्यंत शांति प्रदान करने वाली मुद्रा है जिसमें दोनों हाथों को जोड़कर हृदय के पास रखा जाता है। यह एक प्रतीकात्मक और शारीरिक मुद्रा है जो सम्मान, एकता, ध्यान और संतुलन को दर्शाती है। इसे अंग्रेजी में "Salutation Seal" या Prayer Pose भी कहा जाता है।



**अंजलि मुद्रा करनी करने की विधि** – किसी भी ध्यान मुद्रा में सीधे बैठें – जैसे सुखासन, पद्मासन या वज्रासन। रीढ़ सीधी रखें, आंखें बंद करें और शरीर को स्थिर करें। दोनों हथेलियों को एक-दूसरे के संपर्क में लाते हुए जोड़ें, जैसे नमस्ते करते हैं। हाथों को धीरे से हृदय के सामने छाती के बीच में रखें। कुछ समय के लिए गहरी सांस लेते हुए इस मुद्रा में स्थिर रहें। मन को शांत करें और भीतर की चेतना पर ध्यान केंद्रित करें।

**अंजलि मुद्रा के लाभ** - मन को शांत करता है और ध्यान केंद्रित करता है। तनाव और बेचैनी कम करता है। हृदय और मस्तिष्क के बीच संतुलन बनाता है। भावनात्मक स्थिरता लाता है। योग अभ्यास की शुरुआत और अंत के लिए उपयुक्त मुद्रा है। सकारात्मक ऊर्जा और आभार की भावना उत्पन्न करता है।

6. **शवासन** - शवासन योग की एक अत्यंत सरल लेकिन अत्यधिक प्रभावशाली मुद्रा है, जिसमें पूरा शरीर पूरी तरह ढीला और स्थिर कर दिया जाता है, जैसे एक शवा। इसका उद्देश्य गहरे स्तर पर शरीर, मन और आत्मा को विश्राम देना है। योगाभ्यास के अंत में यह मुद्रा की जाती है ताकि शरीर को ऊर्जा पुनः प्राप्त हो और मांसपेशियों को विश्राम मिले।



**शवासन करने की विधि** - समतल स्थान पर पीठ के बल लेट जाएं। दोनों पैरों को थोड़ा फैलाकर रखें, पंजे बाहर की ओर ढीले हों। दोनों हाथ शरीर से थोड़ी दूरी पर रखें, हथेलियाँ ऊपर की ओर खुली रहें। आंखें बंद करें और चेहरे सहित पूरे शरीर को ढीला छोड़ दें। अपने शरीर के हर हिस्से पर ध्यान दें – पैर की उंगलियों से लेकर सिर तक। धीरे-धीरे सांस लें और छोड़ें, बस उसे महसूस करें। 5 से 15 मिनट तक इसी स्थिति में रहें। फिर धीरे-धीरे हाथ-पैर हिलाएं, करवट लेकर बैठें और आंखें खोलें।

**शवासन के लाभ** - शरीर और मन को गहराई से विश्राम देता है। थकावट, तनाव और चिंता दूर करता है। रक्तचाप और हृदय गति को नियंत्रित करता है। ध्यान और आत्म-निरीक्षण के लिए उपयुक्त, अनिद्रा और मानसिक बेचैनी में अत्यंत लाभकारी, योगाभ्यास के बाद शरीर की ऊर्जा को संतुलित करता है।

**सावधानियाँ** - सो जाने से बचें, सचेत विश्राम करें, बहुत ठंडी जगह पर न करें, शरीर ढक कर कर सकते हैं। पीठ में अत्यधिक दर्द हो तो घुटनों के नीचे तकिया रखें।

#### सुबह योग और प्राणायाम क्यों हैं अमृत समान ?

"सुबह उठते ही शुद्ध वातावरण में योग और प्राणायाम का अभ्यास करना हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी होता है। इस समय वातावरण में प्राणवायु सबसे अधिक सक्रिय होती है। वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि सुबह के समय वायु में ऑक्सीजन का स्तर अधिक होता है। सूर्य की पहली किरणों में 'वाइटल प्रोटॉन्स' (Vital Protons) होते हैं, जो सूर्य के तीव्र होते ही क्षीण होने लगते हैं।"

#### इसलिए सुबह की ताज़ी हवा में

#### कम से कम 10-15 मिनट जरूर बिताएं

"सुबह-सुबह किसी पार्क, बालकनी, छत या खुले मैदान में जहाँ ताज़ी हवा और सूर्य की पहली किरणें आसानी से मिलें, वहाँ बैठकर कम से कम 10-15 मिनट प्राणायाम जरूर करें। यह प्रकाश और शुद्ध वायु शरीर के लिए पहला और महत्वपूर्ण आहार बनती है, जो कोशिकाओं को ऊर्जा देती है, मस्तिष्क को सक्रिय करती है, और दिनभर के तनाव से लड़ने के लिए शक्ति प्रदान करती है।"

#### "सुबह की धूप में योग - शरीर के लिए अमृत"

सुबह कुछ मिनट आंखें बंद कर शरीर और चेहरे पर धूप का स्पर्श लें, यह विटामिन D, नींद का हार्मोन सिराटोनिन और बॉडी क्लॉक के लिए अमृत के समान है।

"सभी योग विशेषज्ञों की सलाह और मार्गदर्शन में करें।" □

## राजस्थान बेसिन में OALP और DSF के अंतर्गत अन्वेषण गतिविधियाँ

✍ संदीप कुमार

मुख्य भूविज्ञानी

राजस्थान बेसिन विभाग, राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर

### 1. भूमिका

भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए घरेलू तेल और गैस उत्पादन को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है। इस दिशा में, राजस्थान बेसिन, विशेषकर बाघेवाला और जैसलमेर उप-बेसिन, और गुजरात का कैम्बे ब्लॉक, हाइड्रोकार्बन संसाधनों के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। ऑयल इंडिया लिमिटेड (OIL) इन क्षेत्रों में अन्वेषण और उत्पादन गतिविधियों में सक्रिय रूप से संलग्न है।

### 2. राजस्थान बेसिन का भौगोलिक और क्षेत्रीय विवरण

राजस्थान बेसिन भारत के पश्चिमी भाग में स्थित है, जो मुख्यतः राजस्थान के जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर और नागौर जिलों में फैला हुआ है। इस बेसिन का विस्तार लगभग 1.26 लाख वर्ग किलोमीटर है। यह बेसिन प्राचीन प्रोटेरोजोइक काल से लेकर नवनिर्मित तलछटी चट्टानों तक विभिन्न भूवैज्ञानिक युगों का प्रतिनिधित्व करता है।

राजस्थान बेसिन को सामान्यतः तीन उप-बेसिनों में विभाजित किया जाता है:

1. जैसलमेर उप-बेसिन (Jaisalmer Sub-basin)
2. बाड़मेर-सरवाड़ी उप-बेसिन (Barmer-Sanchor Sub-basin)
3. बीकानेर-नागौर उप-बेसिन (Bikaner-Nagaur Sub-basin)

### 3. भूवैज्ञानिक परिदृश्य

राजस्थान बेसिन की चट्टानों में प्राचीनतम धरातली और तलछटी चट्टानें पाई जाती हैं। यह बेसिन प्राचीन प्रोटेरोजोइक काल से लेकर नवनिर्मित तलछटी चट्टानों तक विभिन्न भूवैज्ञानिक युगों का प्रतिनिधित्व करता है जो पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस के लिए उपयुक्त भंडार प्रदान करती हैं।

### 4. भूभौतिकीय परिदृश्य (Geophysical Scenario)

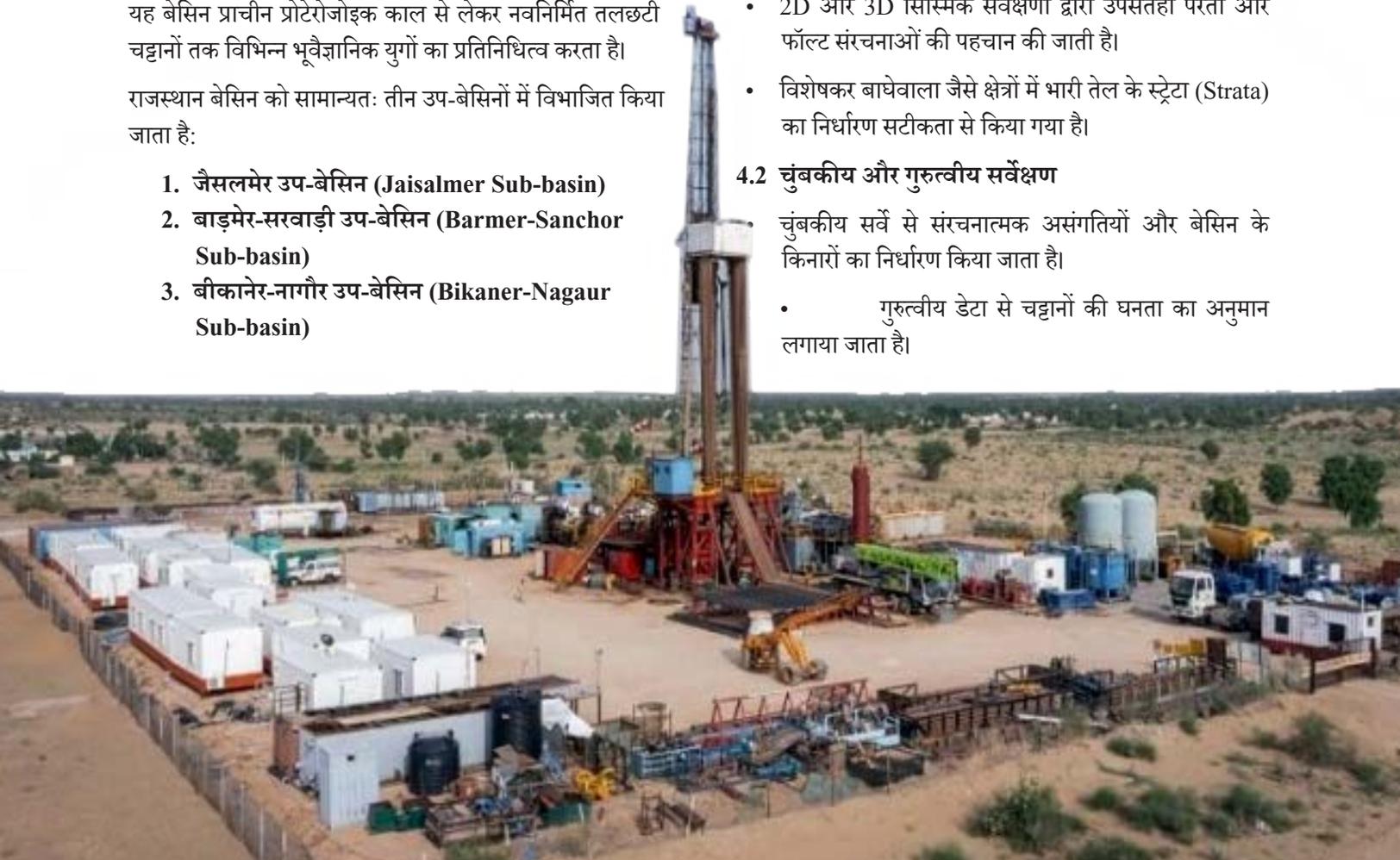
भूभौतिकीय तकनीकें जैसे सिस्मिक सर्वेक्षण, गुरुत्वीय और चुंबकीय सर्वेक्षण तथा विद्युत रेसिस्टिविटी सर्वेक्षण राजस्थान बेसिन की संरचनाओं और तेल-गैस भंडारों की पहचान में अत्यंत सहायक रही हैं।

#### 4.1 सिस्मिक सर्वेक्षण (Seismic Survey)

- 2D और 3D सिस्मिक सर्वेक्षणों द्वारा उपसतही परतों और फॉल्ट संरचनाओं की पहचान की जाती है।
- विशेषकर बाघेवाला जैसे क्षेत्रों में भारी तेल के स्ट्रेटा (Strata) का निर्धारण सटीकता से किया गया है।

#### 4.2 चुंबकीय और गुरुत्वीय सर्वेक्षण

- चुंबकीय सर्वे से संरचनात्मक असंगतियों और बेसिन के किनारों का निर्धारण किया जाता है।
- गुरुत्वीय डेटा से चट्टानों की घनता का अनुमान लगाया जाता है।



#### 4.3 विद्युत रेसिस्टिविटी (Electrical Resistivity)

- यह तकनीक भूजल और लवणीय क्षेत्रों की पहचान में उपयोगी है, विशेषकर बीकानेर और नागौर क्षेत्र में।

### 5. बाघेवाला क्षेत्र में भारी तेल उत्पादन (Heavy Oil Production in Baghewala)

#### 5.1 परिचय

बाघेवाला, बीकानेर जिले में स्थित, भारी तेल के भंडारों के लिए प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र बीकानेर-नागौर उप-बेसिन का हिस्सा है और यहाँ की चट्टानों में क्ले, शेल और सैंडस्टोन की उपस्थिति है।

#### 5.2 भारी तेल की विशेषताएँ

- भारी तेल उच्च विस्कोसिटी वाला, गाढ़ा और काला पदार्थ होता है।
- इसकी API ग्रेविटी 10° से कम होती है, जिससे इसे परिवहन और उत्पादन में तकनीकी चुनौतियाँ आती हैं।

#### 5.3 भूगर्भीय संरचना

- तेल के स्रोत मुख्यतः तलछटी संरचनाओं में संचित हैं।

#### 5.4 उत्खनन और उत्पादन की तकनीकें

चूंकि भारी तेल गाढ़ा होता है, इसलिए सामान्य पंपिंग से इसे निकालना संभव नहीं होता। इसके लिए विशेष तकनीकों का उपयोग किया जाता है:

#### (i) थर्मल रिकवरी तकनीक (Thermal Recovery Methods)

- Cyclic Steam Stimulation (CSS):** एक ही कुएँ में स्टीम इंजेक्ट कर, फिर कुछ समय बाद उस कुएँ से तेल निकाला जाता है। ऑयल इंडिया लिमिटेड ने बाघेवाला क्षेत्र में भारी तेल उत्पादन के लिए Cyclic Steam Stimulation (CSS) तकनीक का उपयोग किया है। यह एक थर्मल EOR (Enhanced Oil Recovery) प्रक्रिया है जिसमें उच्च तापमान का स्टीम इंजेक्ट करके तेल की विस्कोसिटी को कम किया जाता है, जिससे उत्पादन में वृद्धि होती है। इस तकनीक के सफल उपयोग से राजस्थान फील्ड्स में दैनिक कच्चे तेल का उत्पादन 700 बैरल तक पहुँच गया है।

#### 5.5 उत्पादन की स्थिति

- वर्तमान में बाघेवाला में कई कुएँ सक्रिय हैं जिनसे सीमित मात्रा में भारी तेल का व्यावसायिक उत्पादन किया जा रहा है।

#### 6. जैसलमेर उप-बेसिन में गैस उत्पादन

जैसलमेर उप-बेसिन में ऑयल इंडिया लिमिटेड ने प्राकृतिक गैस

के उत्पादन के लिए कई कुओं की ड्रिलिंग की है। इनमें डांडेवाला, बगिटिब्बा और तनोट खनन पट्टे शामिल हैं। इन क्षेत्रों में गैस उत्पादन की क्षमता 1 मिलियन स्टैंडर्ड क्यूबिक मीटर प्रति दिन (mmscmd) है।

#### 7. OALP और DSF के अंतर्गत अन्वेषण गतिविधियाँ

ऑयल इंडिया लिमिटेड ने सरकार की हाइड्रोकार्बन अन्वेषण और लाइसेंसिंग नीति (HELP) के तहत ओपन एकरेज लाइसेंसिंग पॉलिसी (OALP) और डिस्कवर्ड स्मॉल फील्ड्स (DSF) बिड राउंड्स में सक्रिय रूप से भाग लिया है।

#### 8. राजस्थान बेसिन में ऊर्जा संभावनाएँ और भविष्य

राजस्थान बेसिन की ऊर्जा संभावनाएँ अत्यंत उज्ज्वल हैं:

- जैसलमेर और बाड़मेर क्षेत्र में हल्के कच्चे तेल (light crude) और गैस की खोज हो चुकी है।
- बाघेवाला जैसे क्षेत्रों में भारी तेल उत्पादन भारत के लिए एक रणनीतिक ऊर्जा स्रोत बन सकता है।
- सरकार और कंपनियाँ मिलकर उन्नत तकनीकों के माध्यम से उत्पादन बढ़ाने के प्रयास कर रही हैं।

#### 9. चुनौतियाँ

- भारी तेल उत्पादन में उच्च लागत और ऊर्जा की जरूरत होती है।
- पर्यावरणीय प्रभाव जैसे भूमिगत जल पर प्रभाव, तापमान वृद्धि आदि मुद्दे हैं।
- मरुस्थलीय क्षेत्र में अवसंरचनात्मक सीमाएँ (infrastructure limitations) भी विकास को प्रभावित करती हैं।

#### 10. समाधान और सुझाव

- अनुसंधान और नवाचार:** उन्नत तकनीकों का अनुसंधान कर लागत में कमी लाना आवश्यक है।
- स्थानीय विकास:** स्थानीय लोगों को रोजगार देकर सामाजिक लाभ सुनिश्चित किया जा सकता है।
- सरकारी सहयोग:** केंद्र और राज्य सरकारों का समन्वय उत्पादन को गति दे सकता है।

#### 11. निष्कर्ष

राजस्थान बेसिन भारत के ऊर्जा मानचित्र में एक उभरता हुआ सितारा है। इसकी भूवैज्ञानिक संरचना, भूभौतिकीय गुणधर्म, और विशेष रूप से बाघेवाला जैसे क्षेत्रों में भारी तेल के भंडार देश को ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में एक नई दिशा प्रदान कर सकते हैं। हालांकि चुनौतियाँ विद्यमान हैं, परंतु वैज्ञानिक तकनीकों, सरकारी सहयोग और सामाजिक समर्थन से यह क्षेत्र भारत के लिए ऊर्जा क्षेत्र में क्रांति ला सकता है। □

## गांवों में वीरान होते घर: एक सामाजिक और सांस्कृतिक चेतावनी

✍ आदित्य भारती,

सहायक कार्यालय अधीक्षक-1 (निगमित सतर्कता)

निगमित कार्यालय, नोएडा

भारत एक कृषि प्रधान देश है और भारत की आत्मा गांवों में बसती है। यहीं से हमारी सांस्कृतिक जड़ें, सामाजिक मूल्यों की नींव और जीवन की सरलता पनपी है। जहां आज भी देश की एक बड़ी आबादी गांवों में निवास करती है। गांव भारतीय संस्कृति, परंपरा और सामाजिक मूल्यों के मूल केंद्र माने जाते हैं। यहां की सरल जीवनशैली, आत्मनिर्भरता और सामूहिकता की भावना समाज के विकास की नींव रही है। परंतु आज हम देख रहे हैं कि अनेक गांवों में बड़े-बड़े घर वीरान पड़े हैं, दरवाजे टूटे हुए हैं, दीवारें जर्जर हो चुकी हैं और आंगन में घास उग आई है। ये सभी घर कभी जीवन से भरपूर थे — जिनमें बच्चों की किलकारी, बुजुर्गों की कहानियाँ, त्योहारों की रौनक और सामाजिक एकता का अद्भुत मेल देखने को मिलता था। अब ये सभी सिर्फ यादें बनकर रह गई हैं। गांवों में वीरान घर एक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संकट की ओर इशारा करते हैं, जिस पर गंभीरता से विचार करना आवश्यक है। यह दृश्य केवल भौतिक उपेक्षा का परिणाम नहीं, बल्कि एक गहरी सामाजिक और सांस्कृतिक विघटन की प्रक्रिया का संकेत है।



गांवों से शहरों की ओर पलायन, वीरान घरों का सबसे बड़ा कारण है।

जैसे-जैसे शिक्षा और सूचना के साधन बढ़े हैं, ग्रामीण युवाओं में बेहतर जीवन की चाह जागृत हुई है। शहरों में नौकरी, व्यापार, आधुनिक सुविधाएं, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का आकर्षण उन्हें खींच ले जाता है। जब एक बार कोई व्यक्ति शहर में बस जाता है, तो धीरे-धीरे उसका परिवार भी वहीं स्थानांतरित हो जाता है। गांव में बना उनका पुश्तैनी घर खाली रह जाता है। यही घर कुछ वर्षों में खंडहर में तब्दील हो जाता है।

कई बार सरकार की ओर से चलाए गए विकास कार्यों जैसे सड़क निर्माण, बड़े-बड़े बांध, खनन परियोजनाएं, औद्योगिक क्षेत्र आदि के चलते ग्रामीणों को जबरन उनके मूल स्थानों से हटाया जाता है। इस प्रक्रिया को 'विस्थापन' कहते हैं। विस्थापित परिवारों को नए स्थानों पर बसाया तो जाता है, लेकिन वे अपना पारंपरिक घर, जमीन और सामाजिक ढांचा खो बैठते हैं। गांव में उनका पुराना घर धीरे-धीरे उजाड़ हो जाता है।

कई बार परिवारों के बीच संपत्ति विवाद, उत्तराधिकार के झगड़े या अन्य पारिवारिक कलह के चलते लोग गांव का घर छोड़ देते हैं। घर की देखभाल न होने के कारण वह धीरे-धीरे खंडहर में बदल जाता है।

कुछ क्षेत्रों में बाढ़, सूखा, भूस्खलन या अन्य आपदाएं लोगों को अपने गांव छोड़ने पर मजबूर कर देती हैं। कई बार खेती योग्य भूमि बंजर हो जाती है और लोग आजीविका के लिए अन्यत्र पलायन कर जाते हैं, जिससे गांवों में घर खाली हो जाते हैं।

गांवों में छोड़े गए घर सिर्फ भौतिक ढांचे नहीं होते, वे हमारी परंपरा, भावनाओं और पहचान का प्रतीक होते हैं। जब कोई घर छोड़ दिया जाता है, तो उसके साथ-साथ एक संपूर्ण जीवन शैली और सांस्कृतिक परंपराएं भी पीछे छूट जाती हैं।

वीरान घर ग्रामीण समाज की एकजुटता को कमजोर करते हैं। गांवों की पहचान हमेशा एकता, सहयोग और सामुदायिक जीवन से रही है। जब गांव खाली होने लगते हैं, तो सामाजिक मेल-जोल, सामूहिक त्योहारों और परंपराओं में कमी आने लगती है। सामाजिक ढांचा बिखरने लगता है।

इन घरों में सिर्फ दीवारें नहीं होतीं, बल्कि उनमें पीढ़ियों की यादें, रीति-

रिवाज और पारंपरिक वास्तुकला समाई होती है। जब ये घर नष्ट होते हैं, तो इसके साथ एक समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर भी मिट जाती है।

गांवों में वीरान घर एक चेतावनी हैं — यह संकेत है कि हम अपनी जड़ों से धीरे-धीरे कटते जा रहे हैं। यह केवल एक ईंट-पत्थर का ढांचा नहीं, बल्कि एक समाज की आत्मा होती है, जिसे हम यून ही नहीं छोड़ सकते। अगर समय रहते इस ओर ध्यान नहीं दिया गया, तो भविष्य में गांव सिर्फ नक्शों पर रह जाएंगे और हमारी संस्कृति केवल किताबों में। अतः यह समय है जब हमें गांवों को पुनर्जीवित करने, युवाओं को गांवों से जोड़ने और वीरान घरों को फिर से जीवन देने की दिशा में ठोस प्रयास करने चाहिए।

आज जरूरत है एक नई सोच की, जहां विकास हो पर जड़ों से कटे बिना। जहां गांवों को छोड़ा न जाए, बल्कि उन्हें फिर से जीवंत किया जाए। जहां वीरान घर फिर से रिश्तों, रंगों और रौनक से भर जाएं। □

## आतंकवाद: एक वैश्विक समस्या

अयोन घोष

कार्यालय सहायक-2 (केबी)

वित्त एवं लेखा विभाग, कोलकाता कार्यालय

### प्रस्तावना

आज के समय में, आतंकवाद दुनिया के सामने एक बहुत बड़ी समस्या है। यह एक ऐसी हिंसा है जिसका कोई धर्म या सीमा नहीं होती। आतंकवाद का मुख्य उद्देश्य अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए लोगों में डर और असुरक्षा पैदा करना है। यह एक ऐसी समस्या है जो समाज की शांति, प्रगति और मानवीय मूल्यों को खतरे में डालती है।

### आतंकवाद क्या है?

आतंकवाद एक ऐसा कार्य है जिसमें हिंसा या हिंसा की धमकी का उपयोग करके लोगों में डर फैलाया जाता है। यह अक्सर राजनीतिक, धार्मिक या वैचारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है। आतंकवादियों का निशाना अक्सर निर्दोष नागरिक होते हैं, और वे स्कूलों, अस्पतालों, धार्मिक स्थलों और सार्वजनिक स्थानों जैसे स्थानों पर हमले करते हैं।

### आतंकवाद के कारण

आतंकवाद के कई अलग-अलग कारण हैं। कुछ मुख्य कारण इस प्रकार हैं:

- ♦ **राजनीतिक असंतोष:** जब लोगों को लगता है कि उनकी सरकार उनकी जरूरतों को पूरा नहीं कर रही है या उनके पास राजनीतिक शक्ति की कमी है, तो वे आतंकवाद का सहारा ले सकते हैं।
- ♦ **आर्थिक असमानता:** गरीबी और बेरोजगारी लोगों को निराश कर सकती है और उन्हें आतंकवाद के प्रति संवेदनशील बना सकती है।
- ♦ **धार्मिक अतिवाद:** कुछ धार्मिक समूह अपने विश्वासों को बढ़ावा देने के लिए हिंसा का उपयोग करते हैं। वे अक्सर अपने कार्यों को धार्मिक ग्रंथों की गलत व्याख्याओं से सही ठहराते हैं।
- ♦ **सामाजिक अन्याय:** जब लोगों को लगता है कि उनके साथ अन्याय किया जा रहा है या उनके अधिकारों का उल्लंघन किया जा रहा है, तो वे आतंकवाद का सहारा ले सकते हैं।
- ♦ **विदेशी हस्तक्षेप:** कुछ मामलों में, विदेशी सरकारें या संगठन आतंकवादी समूहों को समर्थन देती हैं ताकि वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें।

### आतंकवाद के प्रभाव

आतंकवाद के कई विनाशकारी प्रभाव होते हैं। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

- ♦ **जानमाल की हानि:** आतंकवादी हमले में कई लोग मारे जाते हैं और घायल होते हैं।
- ♦ **आर्थिक नुकसान:** आतंकवादी हमले संपत्ति को नष्ट कर सकते हैं और व्यापार और पर्यटन को बाधित कर सकते हैं।
- ♦ **राजनीतिक अस्थिरता:** आतंकवाद सरकार को अस्थिर कर सकता है और राजनीतिक व्यवस्था में अविश्वास पैदा कर सकता है।
- ♦ **सामाजिक विघटन:** आतंकवाद समुदायों को विभाजित कर सकता है और लोगों के बीच अविश्वास पैदा कर सकता है।
- ♦ **मनोवैज्ञानिक प्रभाव:** आतंकवादी हमले बचे हुए लोगों में डर, चिंता और अवसाद पैदा कर सकते हैं।

### आतंकवाद से मुकाबला

आतंकवाद से मुकाबला करने के लिए कई अलग-अलग रणनीतियाँ हैं। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

- ♦ **कानून प्रवर्तन:** सरकारें आतंकवादी समूहों को गिरफ्तार करने और उन्हें न्याय के कटघरे में लाने के लिए कानून प्रवर्तन का उपयोग करती हैं।
- ♦ **खुफिया जानकारी:** सरकारें आतंकवादी हमलों को रोकने के लिए खुफिया जानकारी एकत्र करती हैं।
- ♦ **सैन्य बल:** कुछ मामलों में, सरकारें आतंकवादी समूहों से लड़ने के लिए सैन्य बल का उपयोग करती हैं।
- ♦ **कूटनीति:** सरकारें अन्य देशों के साथ काम करती हैं ताकि



आतंकवाद को रोका जा सके।

- ◆ **आर्थिक विकास:** सरकारें गरीबी और बेरोजगारी को कम करने के लिए काम करती हैं, जो आतंकवाद के मूल कारण हो सकते हैं।
- ◆ **शिक्षा:** शिक्षा लोगों को सहिष्णुता और समझ के मूल्यों के बारे में सिखाती है, जो आतंकवाद का मुकाबला करने में मदद कर सकती है।
- ◆ **सामुदायिक जुड़ाव:** समुदायों को आतंकवाद का मुकाबला करने के प्रयासों में शामिल किया जाना चाहिए।

### भारत में आतंकवाद

भारत कई वर्षों से आतंकवाद से प्रभावित रहा है। देश ने कई आतंकवादी हमले देखे हैं, जिनमें 2001 में संसद पर हमला, 2008 में मुंबई हमला, 2019 में पुलवामा हमला और हाल ही में पहलगाम आतंकवादी हमला शामिल हैं। भारत में आतंकवाद के कई अलग-अलग कारण हैं, जिनमें राजनीतिक असंतोष, धार्मिक अतिवाद और सीमा पार आतंकवाद शामिल हैं। भारत सरकार ने आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए कई उपाय किए हैं, लेकिन यह समस्या अभी भी एक चुनौती बनी हुई है।

### निष्कर्ष

आतंकवाद एक जटिल और लगातार बनी रहने वाली समस्या है जिसका दुनिया भर के समाजों पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता है। यह हिंसा और भय के कृत्यों से चिह्नित है, जिसका उद्देश्य राजनीतिक, वैचारिक या धार्मिक उद्देश्यों को प्राप्त करना है। आतंकवाद के कारण बहुआयामी हैं, जिनमें राजनीतिक असंतोष, सामाजिक अन्याय, आर्थिक असमानता और चरमपंथी विचारधाराएँ शामिल हैं। इन कारणों के परिणाम दूरगामी

हैं, जिसमें जानमाल की हानि, आर्थिक व्यवधान, राजनीतिक अस्थिरता और प्रभावित समुदायों के बीच अविश्वास शामिल हैं।

आतंकवाद से निपटने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिसमें बहुआयामी रणनीतियाँ शामिल हैं। मजबूत कानून प्रवर्तन एजेंसियाँ, उन्नत खुफिया तंत्र और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग आवश्यक हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षा और सामुदायिक जुड़ाव, सहिष्णुता, समझ और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के मूल्यों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गरीबी, बेरोजगारी और सामाजिक अन्याय जैसे अंतर्निहित मुद्दों को संबोधित करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये कमजोर व्यक्तियों को आतंकवादी समूहों के लिए अतिसंवेदनशील बना सकते हैं।

भारत, अपने इतिहास में कई आतंकवादी हमलों का शिकार रहा है, आतंकवाद के खतरे का सामना करने में लचीलापन और दृढ़ संकल्प प्रदर्शित करता है। सरकार द्वारा किए गए उपायों के बावजूद, सीमा पार आतंकवाद और चरमपंथी विचारधाराओं से उत्पन्न चुनौतियाँ बनी रहती हैं। फिर भी, लोकतांत्रिक मूल्यों, एक मजबूत नागरिक समाज और सक्रिय समुदायों के प्रति देश की प्रतिबद्धता आशा की किरण प्रदान करती है।

आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई एक सतत प्रयास है जिसके लिए सरकारों, नागरिक समाज और व्यक्तियों से निरंतर सतर्कता, एकता और सहयोग की आवश्यकता होती है। हिंसा और भय के आगे घुटने टेकने के बजाय, समाजों को शांति, न्याय और मानवाधिकारों के सिद्धांतों को बनाए रखना चाहिए। केवल एक बहुआयामी दृष्टिकोण के माध्यम से जो सुरक्षा उपायों को संबोधित करता है, मूल कारणों को संबोधित करता है, और संवाद और समझ को बढ़ावा देता है, दुनिया वास्तव में आतंकवाद के खतरे से मुक्त हो सकती है। □

## महाकुंभ (2025) और मेरा अनुभव

✍ चन्द्रेश पाठक

प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

वित्त एवं लेखा विभाग, दुलियाजान

### प्रारंभ

कुंभ और महाकुंभ के बारे में मैं अपने घर में बचपन से सुनता आ रहा था। जब भी टीवी में इसके बारे में बताता तो पापा हमेशा बोलते कि कुंभ 6 साल में और महाकुंभ 12 साल में एक बार आता है। तब मुझे मन करता था कि जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तो मैं भी जाऊँगा स्नान करने कुंभ में। ऐसा शायद हर बच्चा सोचता होगा किसी न किसी चीज के बारे में जो वो अपने मम्मी या पापा से सुनता है।

साल 2025 में कुंभ स्नान करने का मेरा सपना पूरा हुआ। हाँ, ये सपना

इसलिए भी शायद पूरा हुआ क्योंकि लोगों ने इसके बारे में इतनी बात जो करना शुरू कर दिया और न्यूज चैनल, यूट्यूब, अखबारों में, हर तरफ इसका खूब प्रचार भी होने लगा।

### रीवा शहर और प्रयागराज

मैं जनवरी में घर गया था छुट्टी पर, उसी समय महाकुंभ का शुभारंभ हुआ था। तब से ही मुझे लगने लगा कि अगर जाना है तो अभी स्नान कर लेते हैं, नहीं तो बाद में नहीं आ पाऊँगा। मेरे घर पर भी यही कहने लगे, तो मैंने मन बना लिया कि इस बार स्नान कर लेते हैं। तो मैं अपने परिवार

के साथ चल पड़ा प्रयागराज। प्रयागराज लगभग 130 किमी है रीवा से, जहाँ मेरा होमटाउन है।

### प्रयागराज

मैं सपरिवार प्रयागराज पहुँचा। वहाँ का दृश्य देखते ही बनता था। हर तरफ गाड़ियों का जमावड़ा, लोगों का सैलाब, पैदल चलते हुए लोग, रास्ते में पानी और कुछ खाने का सामान बेचते हुए दुकान वाले। रामबाग चौराहे पर सूर्य नमस्कार करते हुए मूर्ति अलग ही छटा बिखेर रही थी। यही सब देखते हुए हम पहुँचे संगम तट पर।

### संगम तट और स्नान

संगम जाते हुए पुल के ऊपर से जो दृश्य था वो देखते बन रहा था। जहाँ तक नजर जा रही थी, कई रंगों से बना हुआ समुद्र दिख रहा था। ये समुद्र जैसा जो था, वो लोगों से भरा एक शहर था, पंडाल थे जहाँ की कल्पवासी ठहरे थे, साधु-संतों के अखाड़े बने थे।

पीपापुल पर लगभग 1 किमी चलकर हम लोग संगम किनारे स्नान करने पहुँचे। लाखों श्रद्धालु पहले से ही वहाँ पर स्नान कर रहे थे। मैंने और मेरी पत्नी ने 11-11 डुबकी लगाई और सूर्य देवता को अर्घ्य देकर बाहर आ गए। मैंने परिवार के साथ मिलकर संगम तट पर आरती और पूजा आर्चना भी की।

शरीर तो कांप रहा था, लेकिन हृदय शांत था। ऐसा लग रहा था जैसे आत्मा का भी शुद्धिकरण हो गया हो।

स्नान के बाद हम गंगाजल भरकर कुंभ नगरी में घूमने के लिए निकल पड़े।

### कुंभ नगरी में विचरण

स्नान के बाद हम कुंभ नगरी में घूमने निकले। हर कदम पर एक नया अनुभव। कहीं कथा चल रही थी, कहीं योग शिविर, कहीं वैदिक मंत्रों की गूंज, और कहीं संतों की गोष्ठियाँ। हर अखाड़े की अपनी परंपरा, अपनी पहचान थी। विशेष रूप से नागा साधुओं का जीवन, उनका वैराग्य, उनकी साधना — बहुत प्रेरणादायक था।

### वापसी और मेरा अनुभव

स्नान और मेला घूमने के बाद यह यात्रा तन को भले ही थका गई हो, लेकिन मन को ऊर्जा से भर गई। जब ट्रेन में वापसी कर रहा था असम के लिए, तो आँखें संतोष से भरी थीं और हृदय कृतज्ञ था।

गंगा माँ की धारा जिस तरह से बहती चली जा रही थी, मानो ऐसा लग रहा था कि गंगा माँ कह रही हों कि जिस निर्मलता से मेरी धारा बह रही

है, उसी पवित्रता और निर्मलता के साथ जीवन जीना चाहिए।

### महाकुंभ क्या है ?

महाकुंभ मेला (पवित्र कलश का त्र्यौहार) हिंदू पौराणिक कथाओं में निहित है। यह दुनिया का सबसे बड़ा सार्वजनिक समागम और आस्था का सामूहिक आयोजन है। इस समागम में मुख्य रूप से तपस्वी, साधु-संत, साध्वियाँ, कल्पवासी और सभी क्षेत्रों के तीर्थयात्री शामिल होते हैं। हिंदू धर्म में कुंभ मेला एक धार्मिक तीर्थयात्रा है जो 12 वर्षों के दौरान चार बार मनाई जाती है। कुंभ मेले का भौगोलिक स्थान भारत में चार स्थानों पर फैला हुआ है और मेला स्थल चार पवित्र नदियों पर स्थित चार तीर्थस्थलों में से एक के बीच घूमता रहता है, जैसा कि नीचे सूचीबद्ध है:

- ♦ हरिद्वार, उत्तराखंड में, गंगा के तट पर
- ♦ मध्य प्रदेश के उज्जैन में शिप्रा नदी के तट पर
- ♦ नासिक, महाराष्ट्र में गोदावरी के तट पर
- ♦ उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में गंगा, यमुना और पौराणिक अदृश्य सरस्वती के संगम पर

प्रत्येक स्थल का उत्सव सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति की ज्योतिषीय एक अलग स्थितियों पर आधारित है। उत्सव ठीक उसी समय होता है जब

ये स्थितियाँ पूरी तरह से व्याप्त होती हैं, क्योंकि इसे हिंदू धर्म में सबसे पवित्र समय माना जाता है। कुंभ मेला

एक ऐसा आयोजन है जो आंतरिक रूप से खगोल विज्ञान, ज्योतिष, आध्यात्मिकता, अनुष्ठानिक परंपराओं और सामाजिक-सांस्कृतिक रीति-रिवाजों और प्रथाओं के विज्ञान को समाहित करता है, जिससे यह ज्ञान में बेहद समृद्ध हो जाता है।

कुंभ मेले में सभी धर्मों के लोग आते हैं, जिनमें साधु और नागा साधु शामिल हैं, जो साधना करते हैं और आध्यात्मिक अनुशासन के कठोर मार्ग का अनुसरण करते हैं, संन्यासी जो अपना एकांतवास छोड़कर केवल कुंभ

मेले के दौरान ही सभ्यता का भ्रमण करने आते हैं, अध्यात्म के साधक और हिंदू धर्म का पालन करने वाले आम लोग भी शामिल हैं।

कुंभ मेले के दौरान अनेक समारोह आयोजित होते हैं; हाथी, घोड़े और रथों पर अखाड़ों का पारंपरिक जुलूस, जिसे 'पेशवाई' कहा जाता है, 'शाही स्नान' के दौरान चमचमाती तलवारों और नागा साधुओं की रस्में, तथा अनेक अन्य सांस्कृतिक गतिविधियाँ, जो लाखों तीर्थयात्रियों को कुंभ मेले में भाग लेने के लिए आकर्षित करती हैं। □



## भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (PSUs) में व्यावसायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (OCCUPATIONAL HEALTH PROGRAM)

✍ फकरुल इस्लाम

वरिष्ठ पैरामेडिकल तकनीशियन- III

चिकित्सा विभाग, दुलियाजान

भारत एक विकासशील देश है, जहाँ आर्थिक, सामाजिक और औद्योगिक विकास को गति देने के लिए अनेक प्रयास किए गए हैं। स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने राष्ट्र निर्माण की दिशा में एक सशक्त कदम के रूप में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (PSUs) की स्थापना की। इन उपक्रमों का उद्देश्य केवल लाभ कमाना नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, रोजगार सृजन और क्षेत्रीय विकास जैसे राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करना भी रहा है। सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। इन उपक्रमों ने न केवल देश के अविक्सित क्षेत्रों में औद्योगीकरण को बढ़ावा दिया, बल्कि क्षेत्रीय असमानताओं को भी कम किया। रोजगार के क्षेत्र में भी PSUs का योगदान महत्वपूर्ण है। लाखों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार देकर इन उपक्रमों ने देश की बेरोजगारी की समस्या को कम करने में सहायता की। आज जब देश आत्मनिर्भर भारत की दिशा में आगे बढ़ रहा है, तब PSUs की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

इन उपक्रमों में लाखों कर्मचारी कार्यरत हैं जो विभिन्न प्रकार की औद्योगिक, तकनीकी और भारी-भरकम गतिविधियों में लगे रहते हैं। ऐसे में कर्मचारियों की सुरक्षा और स्वास्थ्य सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है। “काम करने के लिए जीवन नहीं, बल्कि जीने के लिए काम करना चाहिए।”- यह कहावत आज के औद्योगिक और आधुनिक समाज में विशेष रूप से प्रासंगिक हो जाती है, जहाँ मनुष्य अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा कार्यस्थल पर व्यतीत करता है। ऐसे में कार्यस्थल का वातावरण, श्रमिक की शारीरिक और मानसिक सेहत को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। इसी संदर्भ में "व्यावसायिक स्वास्थ्य" (Occupational Health) की अवधारणा उभरती है, जो श्रमिकों को कार्यस्थल पर सुरक्षित, स्वस्थ और अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य करती है।

भारत जैसे विकासशील और श्रमिक-प्रधान देश में, जहाँ लगभग 50 करोड़ से अधिक कार्यरत जनसंख्या है, वहाँ व्यावसायिक स्वास्थ्य केवल एक विषय नहीं बल्कि एक सामाजिक और आर्थिक आवश्यकता है।



आधुनिक युग में जैसे-जैसे उद्योग और तकनीक का विकास हो रहा है, वैसे-वैसे कार्यस्थलों पर काम करने वालों की सुरक्षा और स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों का महत्व भी बढ़ता जा रहा है। व्यावसायिक स्वास्थ्य का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि हर कार्यस्थल अपने कर्मचारियों को एक सुरक्षित, स्वस्थ और अनुकूल वातावरण प्रदान करे, जिससे वे शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहकर कार्य कर सकें। व्यावसायिक स्वास्थ्य एक ऐसा क्षेत्र है जो कार्यस्थल पर श्रमिकों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए कार्य करता है। इसका मुख्य उद्देश्य कार्य से संबंधित बीमारियों, दुर्घटनाओं और स्वास्थ्य जोखिमों को रोकना और नियंत्रित करना होता है।

**व्यावसायिक स्वास्थ्य** का तात्पर्य उस विज्ञान और नीति से है, जो कार्यस्थल पर श्रमिकों की शारीरिक, मानसिक और सामाजिक भलाई सुनिश्चित करने के लिए बनाए गए हैं। इसका मुख्य उद्देश्य है:

- ◆ श्रमिकों को बीमारियों और दुर्घटनाओं से बचाना।
- ◆ उन्हें मानसिक तनाव और कार्य से संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं से मुक्त रखना।
- ◆ एक ऐसा कार्य वातावरण प्रदान करना जो उनकी कार्यक्षमता और गुणवत्ता को बढ़ाए।

**व्यावसायिक स्वास्थ्य का महत्व:**

◆ **स्वास्थ्य की सुरक्षा:** व्यावसायिक स्वास्थ्य यह सुनिश्चित करता है कि कर्मचारियों को ऐसे खतरनाक रसायनों, भारी मशीनों, शोर, और अन्य जोखिम भरे तत्वों से बचाया जाए जो उनके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं।

◆ **उत्पादकता में वृद्धि:** जब कर्मचारी स्वस्थ और सुरक्षित होते हैं, तो वे अधिक कुशलता और उत्साह से काम करते हैं, जिससे संस्था की उत्पादकता और गुणवत्ता दोनों में सुधार होता है।

◆ **मानसिक संतुलन बनाए रखना:** कार्यस्थलों पर बढ़ता मानसिक तनाव, समय का दबाव और कार्यभार कर्मचारियों

के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। व्यावसायिक स्वास्थ्य इन समस्याओं की पहचान कर उनका समाधान करने में सहायक होता है।

◆ **दुर्घटनाओं की रोकथाम:** उचित सुरक्षा उपायों और प्रशिक्षण के माध्यम से कार्यस्थल पर होने वाली दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है, जिससे मानव जीवन की रक्षा होती है।

◆ **कानूनी और नैतिक उत्तरदायित्व:** हर संस्था का यह नैतिक और कानूनी दायित्व है कि वह अपने कर्मचारियों को एक सुरक्षित और स्वच्छ कार्य वातावरण प्रदान करे।

### व्यावसायिक स्वास्थ्य के लाभ (Benefits of Occupational Health)

व्यावसायिक स्वास्थ्य न केवल कर्मचारियों के जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाता है, बल्कि यह संस्था और राष्ट्र दोनों के लिए भी अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है। व्यावसायिक स्वास्थ्य केवल कर्मचारियों की सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संस्थान की सफलता, सामाजिक विकास और देश की आर्थिक प्रगति से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। जब कर्मचारियों को स्वास्थ्यकर वातावरण मिलता है, तो न केवल उनकी कार्यक्षमता बढ़ती है, बल्कि उनका आत्मविश्वास और संगठन के प्रति निष्ठा भी मजबूत होती है। अतः यह आवश्यक है कि सभी कार्यस्थलों पर व्यावसायिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता दी जाए, ताकि एक स्वस्थ, सुरक्षित और खुशहाल कार्य संस्कृति विकसित हो सके।

### व्यक्तिगत, संगठनात्मक, और राष्ट्रीय स्तर पर वर्गीकृत रूप में व्यावसायिक स्वास्थ्य के प्रमुख लाभ:

#### 1. व्यक्तिगत (श्रमिक) स्तर पर लाभ:

- ◆ **शारीरिक स्वास्थ्य की सुरक्षा:**
  - श्रमिक हानिकारक रसायनों, धूल, शोर, ऊष्मा, विकिरण आदि से सुरक्षित रहता है।
  - कार्यस्थल पर सुरक्षा उपायों के कारण बीमारियों और दुर्घटनाओं से बचाव होता है।
- ◆ **मानसिक तनाव में कमी:**
  - अनुकूल कार्य वातावरण मानसिक संतुलन को बनाए रखता है।
  - वर्क-लाइफ बैलेंस और सामाजिक समर्थन बेहतर होता है।
- ◆ **लंबी कार्यक्षमता :**
  - निरंतर स्वास्थ्य जांच और देखभाल से कर्मचारी लंबे समय तक काम करने योग्य बना रहता है।
- ◆ **आर्थिक सुरक्षा:**

- स्वास्थ्य बीमा, चिकित्सा सुविधा और आपातकालीन सेवाएं मिलने से आर्थिक बोझ कम होता है।

#### 2. संस्था (Company/Institution) स्तर पर लाभ:

- ◆ एक स्वस्थ कर्मचारी अधिक कुशल और अनुशासित होता है, जिससे कार्यक्षमता बढ़ती है।
- ◆ स्वास्थ्य समस्याओं के कम होने से कर्मचारियों का काम से अनुपस्थित रहना घटता है।
- ◆ अच्छा स्वास्थ्य और कार्यपरिवेश मिलने से कर्मचारी लंबे समय तक संगठन से जुड़ा रहता है।
- ◆ सुरक्षा नियमों का पालन कर संगठन खुद को जुर्माने या कानूनी कार्रवाई से बचा सकता है।
- ◆ व्यावसायिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने से कंपनी की सामाजिक छवि और कॉर्पोरेट ब्रांडिंग मजबूत होती है।

#### 3. राष्ट्रीय और सामाजिक स्तर पर लाभ:

- ◆ **राष्ट्र की आर्थिक प्रगति:** जब श्रमिक वर्ग स्वस्थ होता है तो राष्ट्र की कुल उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है।
- ◆ **स्वास्थ्य बजट पर भार कम:** कम बीमारियाँ और दुर्घटनाएँ होने से सरकारी स्वास्थ्य प्रणाली पर बोझ घटता है।
- ◆ **सामाजिक न्याय की प्राप्ति:** सभी वर्गों को सुरक्षित और समान कार्य अवसर मिलते हैं, जिससे सामाजिक समरसता बढ़ती है।
- ◆ **SDGs और वैश्विक स्वास्थ्य लक्ष्यों में योगदान:** व्यावसायिक स्वास्थ्य संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Goals) जैसे स्वास्थ्य एवं कल्याण (SDG 3) और सभ्य कार्य व आर्थिक विकास (SDG 8) में सीधा योगदान देता है।

#### भारतीय परिप्रेक्ष्य में व्यावसायिक स्वास्थ्य का महत्व:

व्यावसायिक स्वास्थ्य (Occupational Health) का तात्पर्य कार्यस्थल पर श्रमिकों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने और उसे बनाए रखने से है। भारत जैसे विकासशील देश के लिए, जहाँ एक विशाल और विविध कार्यबल है और तीव्र गति से औद्योगीकरण हो रहा है, व्यावसायिक स्वास्थ्य का महत्व कई गुना बढ़ जाता है। यह केवल श्रमिकों के अधिकारों का मामला नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय उत्पादकता, आर्थिक विकास और सामाजिक स्थिरता के लिए भी एक महत्वपूर्ण स्तंभ है।

#### 1. मानव पूंजी का संरक्षण

भारत की सबसे बड़ी संपत्ति उसका युवा और विशाल कार्यबल है। व्यावसायिक



स्वास्थ्य का प्राथमिक उद्देश्य इस मानव पूंजी की रक्षा करना है। जब श्रमिक स्वस्थ और सुरक्षित होते हैं, तो वे अपनी पूरी क्षमता से काम कर पाते हैं। कार्य-संबंधी चोटों और बीमारियों की रोकथाम से श्रमिकों का जीवन स्तर बेहतर होता है, उनकी आय सुरक्षित रहती है और वे अपने परिवारों का बेहतर ढंग से भरण-पोषण कर पाते हैं। यह अनुपस्थिति (absenteeism) और उपस्थितिवाद (presenteeism - जब श्रमिक बीमार होने पर भी काम पर आते हैं, जिससे उत्पादकता कम होती है) को कम करने में मदद करता है।

## 2. उत्पादकता और आर्थिक विकास

स्वस्थ कार्यबल सीधे तौर पर उत्पादकता में वृद्धि करता है। कार्यस्थल पर सुरक्षा और स्वास्थ्य मानकों का पालन करने से दुर्घटनाएँ और व्यावसायिक बीमारियाँ कम होती हैं, जिससे काम में रुकावटें कम आती हैं। इसके परिणामस्वरूप उत्पादन में निरंतरता बनी रहती है और उत्पादों या सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार होता है। उच्च उत्पादकता सीधे तौर पर आर्थिक विकास में योगदान करती है, जिससे देश की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ती है और निवेश आकर्षित होता है।

## 3. गरीबी उन्मूलन और सामाजिक सुरक्षा

कार्य-संबंधी चोटें या बीमारियाँ श्रमिकों और उनके परिवारों को गरीबी के दुष्चक्र में धकेल सकती हैं। उपचार के खर्च, आय का नुकसान और दीर्घकालिक विकलांगता से परिवार आर्थिक रूप से टूट सकते हैं। प्रभावी व्यावसायिक स्वास्थ्य उपाय इन जोखिमों को कम करते हैं, जिससे श्रमिकों की आय की सुरक्षा होती है और उन्हें सामाजिक सुरक्षा जाल से बाहर निकलने से रोका जा सकता है। यह गरीबी उन्मूलन के राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

## 4. कानूनी और नैतिक दायित्व

भारत में विभिन्न श्रम कानून नियोक्ताओं पर अपने श्रमिकों के लिए सुरक्षित और स्वस्थ कार्य वातावरण प्रदान करने का कानूनी दायित्व डालते हैं। हालाँकि इन कानूनों का प्रवर्तन अक्सर कमजोर होता है, फिर भी इनका अस्तित्व नियोक्ताओं के नैतिक दायित्व को रेखांकित करता है। एक जिम्मेदार व्यवसाय के रूप में, श्रमिकों के स्वास्थ्य और सुरक्षा को प्राथमिकता देना न केवल कानूनी रूप से आवश्यक है, बल्कि यह कंपनी की प्रतिष्ठा और कर्मचारी मनोबल के लिए भी महत्वपूर्ण है।

## 5. सार्वजनिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव

व्यावसायिक स्वास्थ्य केवल कार्यस्थल तक ही सीमित नहीं है; इसका व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य पर भी महत्वपूर्ण

प्रभाव पड़ता है। कार्यस्थल पर संक्रामक रोगों की रोकथाम से समुदाय में उनके प्रसार को रोका जा सकता है। इसी तरह, कार्यस्थल पर रसायनों या प्रदूषण के जोखिम को कम करने से आसपास के समुदायों में भी स्वास्थ्य जोखिम कम होते हैं। एक स्वस्थ कार्यबल एक स्वस्थ समुदाय में योगदान देता है।

## 6. सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति

व्यावसायिक स्वास्थ्य संयुक्त राष्ट्र के कई सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के साथ सीधे जुड़ा हुआ है:

- ◆ **अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण (SDG 3):** यह सीधे तौर पर श्रमिकों के स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देता है।
- ◆ **सभ्य कार्य और आर्थिक विकास (SDG 8):** यह सभी के लिए पूर्ण और उत्पादक रोजगार और सभ्य कार्य को बढ़ावा देने के लिए सुरक्षित और संरक्षित कार्य वातावरण सुनिश्चित करने पर जोर देता है।
- ◆ **असमानताओं में कमी (SDG 10):** यह कार्यस्थल पर स्वास्थ्य असमानताओं को कम करने में मदद करता है, खासकर असंगठित क्षेत्र के कमजोर श्रमिकों के लिए।

## व्यावसायिक स्वास्थ्य की चुनौतियाँ

भारत जैसे विकासशील देश में व्यावसायिक स्वास्थ्य (Occupational Health) एक महत्वपूर्ण लेकिन अक्सर उपेक्षित क्षेत्र है। देश की विशाल और विविध कार्यबल, जिसमें एक बड़ा हिस्सा असंगठित क्षेत्र में कार्यरत है, को कार्यस्थल पर कई स्वास्थ्य और सुरक्षा संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों का सामना करने में विनियामक ढांचे की कमजोरियाँ, अपर्याप्त स्वास्थ्य सेवा अवसंरचना और जागरूकता की कमी प्रमुख बाधाएँ हैं।

## 1. संरचनात्मक चुनौतियाँ (Structural Challenges):

अनौपचारिक क्षेत्र का प्रभुत्व: भारत के कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा (लगभग 90%) असंगठित क्षेत्र में कार्यरत है, जिसमें कृषि, निर्माण, छोटे पैमाने के उद्योग और घरेलू कार्य शामिल हैं। इस क्षेत्र के श्रमिकों को अक्सर निम्न कार्य परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, जैसे:

- ◆ **अस्थिर रोजगार और कम मजदूरी:** श्रमिकों को अक्सर असुरक्षित और अनिश्चित नौकरियों में काम करना पड़ता है, जहाँ मजदूरी कम होती है और सामाजिक सुरक्षा लाभों का अभाव होता है।
- ◆ **सुरक्षा नियमों का अभाव:** असंगठित क्षेत्र में औपचारिक सुरक्षा और स्वास्थ्य नियमों का पालन शायद ही कभी किया जाता है, जिससे श्रमिकों को खतरनाक



रसायनों, धूल, शोर और शारीरिक जोखिमों के सीधे संपर्क में आना पड़ता है।

◆ **स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच:** इन श्रमिकों के पास अक्सर पर्याप्त चिकित्सा सुविधाओं और व्यावसायिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच नहीं होती, जिससे कार्य-संबंधी चोटों और बीमारियों का पता लगाना और उनका इलाज करना मुश्किल हो जाता है।

#### कानूनों का सीमित दायरा:

◆ फैक्ट्री एक्ट, ESI स्कीम और OSH कोड जैसे कानून केवल संगठित क्षेत्रों तक सीमित हैं।

◆ अनौपचारिक और छोटे व्यवसाय इनकी जद से बाहर रहते हैं।

◆ भारत के कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा (लगभग 90%) असंगठित क्षेत्र में कार्यरत है, जिसमें कृषि, निर्माण, छोटे पैमाने के उद्योग और घरेलू कार्य शामिल हैं। इस क्षेत्र के श्रमिकों को अक्सर निम्न कार्य परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, जैसे:

◆ अस्थिर रोजगार और कम मजदूरी: श्रमिकों को अक्सर असुरक्षित और अनिश्चित नौकरियों में काम करना पड़ता है, जहाँ मजदूरी कम होती है और सामाजिक सुरक्षा लाभों का अभाव होता है।

◆ सुरक्षा नियमों का अभाव: असंगठित क्षेत्र में औपचारिक सुरक्षा और स्वास्थ्य नियमों का पालन शायद ही कभी किया जाता है, जिससे श्रमिकों को खतरनाक रसायनों, धूल, शोर और शारीरिक जोखिमों के सीधे संपर्क में आना पड़ता है।

◆ स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच: इन श्रमिकों के पास अक्सर पर्याप्त चिकित्सा सुविधाओं और व्यावसायिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच नहीं होती, जिससे कार्य-संबंधी चोटों और बीमारियों का पता लगाना और उनका इलाज करना मुश्किल हो जाता है।

#### 2. प्रशासनिक और कार्यान्वयन संबंधी चुनौतियाँ:

भारत में स्वास्थ्य सेवा प्रणाली, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, व्यावसायिक स्वास्थ्य की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है:

◆ **ग्रामीण-शहरी विभाजन:** अधिकांश अस्पताल और विशेषज्ञ स्वास्थ्य सेवाएँ शहरी क्षेत्रों में केंद्रित हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा का बुनियादी ढाँचा अपर्याप्त है।

◆ **पेशेवरों की कमी:** व्यावसायिक स्वास्थ्य चिकित्सकों, नर्सों और सुरक्षा विशेषज्ञों की भारी कमी है, जिससे कार्यस्थल पर स्वास्थ्य निगरानी और निवारक उपायों को लागू करना मुश्किल हो जाता है।

◆ **डेटा की कमी:** कार्यस्थल पर होने वाली दुर्घटनाओं, चोटों, मौतों और व्यावसायिक बीमारियों पर विश्वसनीय राष्ट्रीय डेटा का अभाव है, जिससे समस्या की वास्तविक भयावहता को समझना और प्रभावी नीतियाँ बनाना मुश्किल हो जाता है।

◆ भारत में प्रति लाख श्रमिकों पर बहुत कम फैक्ट्री निरीक्षक हैं।

◆ निरीक्षण प्रणाली में पारदर्शिता और तकनीकी दक्षता की कमी है।

#### कम बजट और संसाधनों की कमी:

◆ व्यावसायिक स्वास्थ्य पर केंद्र और राज्य सरकारें बहुत कम बजट खर्च करती हैं।

◆ ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों में स्वास्थ्य केंद्रों की पहुँच सीमित है।

#### 3. सामाजिक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियाँ:

जागरूकता की कमी:

◆ श्रमिकों को स्वास्थ्य अधिकारों, बीमा योजनाओं, सुरक्षा उपकरणों के उपयोग की जानकारी ही नहीं होती।

सुरक्षा संस्कृति का अभाव:

◆ भारत में कई उद्योगों में सुरक्षा को "अतिरिक्त खर्च" माना जाता है, न कि एक जरूरत।

मानसिक स्वास्थ्य की अनदेखी:

◆ व्यावसायिक स्वास्थ्य में आज भी मानसिक स्वास्थ्य को नजरअंदाज किया जाता है।

◆ तनाव, अवसाद, बर्नआउट जैसी स्थितियाँ तेजी से बढ़ रही हैं।

#### 4. औद्योगिक और नियोक्ता पक्ष की चुनौतियाँ:

लाभ प्राथमिकता – स्वास्थ्य की अनदेखी:

◆ कई कंपनियाँ लाभ बढ़ाने के चक्कर में सुरक्षा नियमों की अवहेलना करती हैं।

पीपीई (PPE) का अभाव या उपयोग में अनिच्छा:

◆ श्रमिकों को अक्सर उचित व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (PPE) नहीं दिए जाते।

◆ कभी-कभी PPE होते हुए भी श्रमिक उसे पहनना असहज या अनावश्यक मानते हैं।

#### 5. डेटा और शोध से जुड़ी चुनौतियाँ:

विश्वसनीय आँकड़ों का अभाव:

◆ भारत में व्यावसायिक बीमारियों और दुर्घटनाओं के सटीक आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

◆ कई मामलों में घटनाएँ रिपोर्ट ही नहीं होतीं।

अनुसंधान और प्रशिक्षण की कमी:

◆ व्यावसायिक स्वास्थ्य पर कार्य करने वाले विशेषज्ञों और संस्थानों की संख्या सीमित है।

◆ मेडिकल कॉलेजों में व्यावसायिक स्वास्थ्य का समुचित पाठ्यक्रम नहीं है।

## 6. उभरते हुए खतरे और चुनौतियाँ

औद्योगीकरण और तकनीकी प्रगति के साथ नए व्यावसायिक खतरे सामने आ रहे हैं:

- ◆ **नए रासायनिक और भौतिक खतरे:** उद्योगों में नए रसायनों और भौतिक ऊर्जा स्रोतों का उपयोग नए स्वास्थ्य जोखिम पैदा करता है।
- ◆ **जलवायु परिवर्तन के प्रभाव:** अत्यधिक गर्मी, यूवी विकिरण और चरम मौसमी घटनाओं के कारण कृषि और निर्माण जैसे बाहरी कार्यों में लगे श्रमिकों के लिए स्वास्थ्य जोखिम बढ़ रहे हैं।
- ◆ **मानसिक स्वास्थ्य और तनाव:** सूचना प्रौद्योगिकी और सेवा उद्योगों में काम के बढ़ते दबाव, लंबे काम के घंटे और नौकरी की अनिश्चितता के कारण कार्य-संबंधी तनाव और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बढ़ रही हैं।

व्यावसायिक स्वास्थ्य की चुनौतियाँ बहुआयामी और गहरी हैं, लेकिन इनका समाधान भी संभव है — बशर्ते कि सरकार, उद्योग, समाज और स्वयं श्रमिक इस दिशा में एकजुट प्रयास करें। एक स्वस्थ कार्यबल, भारत के विकास की नींव है, और उसकी रक्षा करना हम सभी की जिम्मेदारी है।

### भारत में व्यावसायिक स्वास्थ्य पर सरकारी प्रयास और कानूनी प्रावधान:

भारत में व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा (Occupational Safety and Health - OSH) सुनिश्चित करने के लिए सरकार ने विभिन्न प्रयास किए हैं और कई कानूनी प्रावधान लागू किए हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य कार्यस्थल पर श्रमिकों के स्वास्थ्य और कल्याण की रक्षा करना, दुर्घटनाओं और बीमारियों को रोकना तथा एक सुरक्षित कार्य वातावरण को बढ़ावा देना है, जो श्रमिकों के कल्याण को सुनिश्चित करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम हैं। हालाँकि, असंगठित क्षेत्र का बड़ा आकार, कानूनों के कमजोर प्रवर्तन, और स्वास्थ्य सेवा अवसंरचना में कमियाँ अभी भी प्रमुख चुनौतियाँ बनी हुई हैं। व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य स्थितियाँ संहिता, 2020 जैसे नए कानून एक व्यापक और समेकित दृष्टिकोण की ओर एक कदम हैं, लेकिन उनके प्रभावी कार्यान्वयन और जमीनी स्तर पर सकारात्मक प्रभाव सुनिश्चित करने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है।

#### 1. कानूनी प्रावधान

भारत में व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा को नियंत्रित करने वाले कई केंद्रीय कानून हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं:

- ◆ **कारखाना अधिनियम, 1948 (The Factories Act, 1948):** यह अधिनियम कारखानों में काम करने वाले श्रमिकों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और कल्याण के लिए विस्तृत प्रावधान निर्धारित करता है। इसमें स्वच्छता, अपशिष्ट निपटान, वेंटिलेशन और तापमान, धूल और धुएँ

पर नियंत्रण, प्रकाश व्यवस्था, पीने का पानी, शौचालय, और प्राथमिक चिकित्सा जैसी स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताएँ शामिल हैं। इसके अलावा, खतरनाक प्रक्रियाओं से संबंधित विशेष प्रावधान भी हैं।

- ◆ **खदान अधिनियम, 1952 (The Mines Act, 1952):** यह अधिनियम खदानों में काम करने वाले श्रमिकों की सुरक्षा, स्वास्थ्य और कल्याण को विनियमित करता है। इसमें व्यावसायिक रोगों की रोकथाम, स्वास्थ्य सर्वेक्षण, चिकित्सा जाँच और खदानों में काम करने की स्थिति से संबंधित प्रावधान शामिल हैं।

- ◆ **भवन और अन्य सन्निर्माण कर्मकार (नियोजन तथा सेवा-शर्त विनियमन) अधिनियम, 1996 (The Building and Other Construction Workers (Regulation of Employment and Conditions of Service) Act, 1996):** यह अधिनियम भवन और अन्य निर्माण कार्यों में लगे श्रमिकों के रोजगार और सेवा शर्तों को विनियमित करता है, और उनकी सुरक्षा, स्वास्थ्य और कल्याण के उपायों का प्रावधान करता है। इसमें निर्माण स्थलों पर विशेष चिकित्सा सेवाओं या व्यावसायिक स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के प्रावधान हैं।

- ◆ **व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य स्थिति संहिता, 2020 (The Occupational Safety, Health and Working Conditions Code, 2020):** यह एक महत्वपूर्ण हालिया पहल है, जिसका उद्देश्य व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य स्थितियों को विनियमित करने वाले 13 मौजूदा केंद्रीय श्रम कानूनों को समेकित और संशोधित करना है। इसमें कारखाना अधिनियम, खदान अधिनियम, बागान श्रम अधिनियम, संविदा श्रम (विनियमन और उन्मूलन) अधिनियम आदि शामिल हैं। इस संहिता का लक्ष्य विभिन्न क्षेत्रों में श्रमिकों के लिए एक समान और व्यापक OSH ढाँचा प्रदान करना है। हालाँकि, इस संहिता के लागू होने की तारीख अभी अधिसूचित नहीं की गई है।

#### 2. सरकारी प्रयास और नीतियाँ

कानूनी ढाँचे के अलावा, भारत सरकार ने व्यावसायिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए कई नीतियाँ और पहल की हैं:

- ◆ **कार्यस्थल पर सुरक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण पर राष्ट्रीय नीति (National Policy on Safety, Health and Environment at Workplace), 2009:** इस नीति का लक्ष्य कार्य-संबंधी चोटों, बीमारियों, आपदाओं और राष्ट्रीय संपत्ति के नुकसान में निरंतर कमी लाना है। यह नीति कार्यस्थल पर सुरक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए एक राष्ट्रीय ढाँचा प्रदान करती है।

- ◆ **श्रम एवं रोजगार मंत्रालय (Ministry of Labour & Employment):** यह मंत्रालय देश में श्रम कानूनों और नीतियों के निर्माण

और कार्यान्वयन के लिए जिम्मेदार है, जिसमें व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा भी शामिल है। यह विभिन्न अधिनियमों के तहत निरीक्षण और प्रवर्तन गतिविधियों का संचालन करता है।

◆ **कारखाना सलाह सेवा एवं श्रम संस्थान महानिदेशालय** (Directorate General Factory Advice Service & Labour Institutes - DGFASLI): यह एक तकनीकी संगठन है जो कारखाना अधिनियम के प्रशासन में केंद्रीय और राज्य सरकारों को सलाह देता है। यह औद्योगिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता पर अनुसंधान, प्रशिक्षण और परामर्श सेवाएँ प्रदान करता है।

◆ **खान सुरक्षा महानिदेशालय** (Directorate General of Mines Safety - DGMS): यह खदानों में सुरक्षा और स्वास्थ्य को विनियमित करने वाला मुख्य नियामक निकाय है। यह खदान अधिनियम के प्रावधानों को लागू करता है और खदान श्रमिकों के लिए सुरक्षित कार्य वातावरण सुनिश्चित करने के लिए दिशानिर्देश जारी करता है।

◆ **राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना** (Rashtriya Swasthya Bima Yojana - RSBY): यद्यपि यह सीधे तौर पर व्यावसायिक स्वास्थ्य योजना नहीं थी, लेकिन इसने असंगठित क्षेत्र के गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों को स्मार्ट कार्ड आधारित कैशलेस स्वास्थ्य बीमा कवर प्रदान

किया, जिससे उन्हें कुछ स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच मिली।

◆ **कौशल विकास पहलें:** सरकार कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से श्रमिकों को सुरक्षित कार्य प्रथाओं और कार्यस्थल पर खतरों से बचने के लिए प्रशिक्षित करने का प्रयास करती है।

◆ **जागरूकता अभियान:** विभिन्न सरकारी निकाय और गैर-सरकारी संगठन कार्यस्थल पर सुरक्षा और स्वास्थ्य के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए अभियान चलाते हैं।

भारत में PSUs के लिए व्यावसायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम न केवल कानूनी आवश्यकता है, बल्कि यह नैतिक और मानवीय जिम्मेदारी भी है। यह कर्मचारियों की सुरक्षा और कल्याण सुनिश्चित कर उनके प्रदर्शन में सुधार लाता है और संगठन के दीर्घकालिक विकास में योगदान करता है। व्यावसायिक स्वास्थ्य केवल किसी एक व्यक्ति का मुद्दा नहीं, बल्कि यह **राष्ट्रीय उत्पादकता, सामाजिक न्याय और मानवाधिकार** से जुड़ा एक महत्वपूर्ण विषय है। यदि एक श्रमिक स्वस्थ और सुरक्षित है, तो उसका परिवार, संस्था और अंततः देश भी प्रगति करेगा। भारत को यदि आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बनना है, तो उसे अपने श्रमिकों को केवल काम का अवसर नहीं, बल्कि **स्वास्थ्य, सुरक्षा और सम्मान** देना होगा। □

## गणित ज्ञान का संगीत है

✍ **गीतांजन रॉय**

कार्यालय सहायक-1 (केबी)

कोलकाता कार्यालय, कोलकाता

किसी भी विषय की अपनी एक लयबद्धता होती है। अपने नियम-आयाम होते हैं। अपने दायरे और क्षेत्र होते हैं। जैसे विज्ञान के लिए कहा जाता है कि विज्ञान किसी भी विषय का सुव्यवस्थित, सुसंगठित एवं क्रमबद्ध ज्ञान होता है। इसी तरह से अगर हम साहित्य की बात करें तो साहित्य अपने आप में भाव समेटे होता है। उसमें एक रस होता है। फिर वह वीर रस, वात्सल्य रस, वियोग, करुणा अथवा प्रेम कुछ भी हो सकता है। हम ऐसे साहित्य की कल्पना नहीं कर सकते हैं, जिसमें कोई भाव ही न हो। इसी तरह से गणित का भी अपना एक गुण होता है। अपनी एक आभा होती है। इसका दायरा असीमित है। यह दायरे को नहीं मानता है। यह ज्ञान का ऐसा किरण पुंज है, जिसकी रोशनी व मार्गदर्शन की सभी विषयों को किसी न किसी स्तर पर जरूरत पड़ती रहती है।

गणित का एक गुण यह भी होता है कि इसकी हर अगली सीढ़ी चढ़ने के लिए उसका पिछली सीढ़ी से सामंजस्य होना आवश्यक होता है। गणित

टूटी हुई सीढ़ियां कभी नहीं चढ़ता है। यह छलांग नहीं लगाता। संगीत की तरह यह सतत लय मांगता है। ठीक वैसे ही, जैसे किसी संगीतज्ञ के संगीत यंत्र का तार अगर बीच में कहीं बाधित हुआ तो फिर उसकी तरंगें आगे यात्रा नहीं कर पातीं। फिर बाकी सभी तार चाहे जितने नवीन और गुणवत्तापूर्ण क्वालिटी के हों, संगीतज्ञ चाहे जितना प्रवीण हो, किंतु संगीत उत्पन्न नहीं हो पाता है। ज्ञान से परिपूर्ण गणित का भी ऐसा ही स्वभाव है। गणित के किसी भी प्रमेय को सिद्ध करने के लिए उसे कई-कई सिद्ध प्रमेयों का सीढ़ियों की भांति सहारा लेना पड़ता है। अगर बीच मार्ग में कोई एक तर्क फेल हुआ या वह अगले शर्त को संतुष्ट नहीं कर रहा है तो गणित उस संकल्पना को मानने से नकार देता है या फिर समय लेता है और आगे की गुत्थियां सुलझाता है। और जब उनके तार (प्रमेयों को) जोड़ लेता है, और उन तारों से गणित के तर्क व प्रमेय (संगीत) प्रवाहित होने लगते हैं तब गणित उन्हें प्रमाणित करता है। किंतु छलांग नहीं लगाता। भले ही वो चीजें स्पष्ट रूप से सिद्ध साबित हो रही हों।

यहां तक कि न्युटन भी गुरुत्वाकर्षण बल को तभी सिद्ध कर पाए जब वह गणितीय पैमाने पर खरी उतरी और यह सिद्ध हुआ कि धरती के गुरुत्व बल  $F$  का मान  $m \cdot g$  होता है। जहां धरती पर गुरुत्वीय त्वरण  $g$  का मान गणितीय मानक पर  $9.8$  मी/सेकंड<sup>2</sup> साबित हुआ। इसी तरह से जब यह पाया गया कि किसी परमाणु की कक्षाओं में रहने वाले ऋणायन इलेक्ट्रॉन नाभिक में स्थित धनायन प्रोटानों के आकर्षण से नाभिक में गिर जाने की बजाय नाभिक में चक्कर लगाते रहते हैं, तो इस गुत्थी को भी तबतक नहीं सुलझाया जा सका, जबतक गणितीय गणना से यह साबित नहीं हो सका कि प्रोटानों के आकर्षण की वजह से उस पर लगने वाला अभिकेंद्र (नाभिक की दिशा में) बल उस पर लगने वाले अपकेंद्र (वृत्तीय गति से बाहर की दिशा में उत्पन्न होने वाले) बल के बराबर व विपरीत दिशा में होने के चलते निरस्त हो जाता है।

ब्रम्हांड की उम्र बतानी हो या धरती पर समुंदर की आयु, इनमें से किसी का भी ज्ञान बिना गणित की कसौटी पर खरे उतरे अमान्य होकर रह जाते हैं। इस तरह से हम कह सकते हैं कि गणित की अपनी लय होती है। उसका स्वभाव तरंग गति जैसी होती है। जिस तरह से हारमोनियम, गिटार, संतूर या ढोल से निकली आवाज बीच में कहीं बाधित होने पर अथवा यंत्र के किसी तार के अवरोधित होने पर पूरी तरह से टूट जाती है, उसी तरह से गणित की कसौटी पर भी कोई भी चीज पूर्णतया बाधित होते हैं। संगीत भी कुछ ऐसा ही होता है। संगीत की ध्वनि तरंग एक बार जहां बाधित हुई, वह उसके आगे नहीं जा सकती। संगीत के लिए लयबद्धता आवश्यक है, छलांग नहीं। संगीत बीच में टूटता नहीं बल्कि उसकी तरंगों का ग्राफ भी स्मूद होता है। जितना ही मधुर संगीत, उतनी ही लयबद्धता होती है। और जिसमें लय न हो, वो संगीत भी नहीं होता। संगीत भी गणित की तरह दो तरह से शुरू होता है। संगीत के शुरुआती चरण में भी गीत के बोल में गीतकार या तो कोई बड़ी/मीठी बात निष्कर्ष के तौर पर कह देता है और फिर गीत उसी को साबित करने के इर्द-गिर्द घूमता रहता है या फिर गीत की शुरुआत किसी कल्पना से करता है और अंत आते-आते किसी एक निश्चित निष्कर्ष पर ले जाकर छोड़ता है। उदाहरण के लिए, “गंगा तेरा पानी अमृत!” इस बोल में गीतकार शुरुआती पंक्ति में ही गंगा के जल को अमृत की संज्ञा देकर बात आगे बढ़ाता है और अपनी बात साबित करने के लिए आगे लयबद्ध तर्क देते

हुए कहता है,

“खेतों-खेतों तुझसे जागी, धरती पर हरियाली।  
फसलें तेरा राग अलापें, झूमे बाली-बाली।  
तेरा पानी पीकर मिट्टी, सोने में ढल जाए  
युग-युग इस देश की धरती तुझसे जीवन जाए...”

इस तरह से गीतकार अपनी पहली पंक्ति की बात को सिद्ध करने के लिए एक से बढ़कर एक वजनदार तर्क देता है और साबित करता है कि गंगा के पानी में वे सारे गुण हैं, जिसकी अमृत के गुणों (प्राणऊर्जा) में संकल्पना की जाती है। गीतकार के तर्क हैं कि गंगा के पानी से धरती पर हरियाली होती है और फसलें उगती हैं। जिससे मानव जीवन पोषित होता है। इसलिए गंगा के पानी को अमृत की संज्ञा दी जा सकती है। इसी तरह से एक गीत जिसके बोल हैं, “मेरे देश प्रेमियों, आपस में प्रेम करो देश प्रेमियों”। इस गीत में गीतकार कुछ संदेश दे रहा है और अपने इस संदेश के पीछे गीतकार के सुंदर और क्रमबद्ध तर्क कुछ इस तरह से होते हैं,

“देखो, ये धरती, हम सब की माता है  
सोचो, आपस में, क्या अपना नाता है  
हम आपस में लड़ बैठे,

हम आपस में लड़ बैठे तो देश को कौन सम्भालेगा  
कोई बाहर वाला अपने ही घर से हमें निकालेगा  
दीवानों होश करो, मेरे देश प्रेमियों  
आपस में प्रेम करो देश प्रेमियों...”

इस तरह से गीतकार अपनी गीतों को लयबद्ध और मधुर तर्कों से साबित करता है। उसकी लयबद्धता, मधुरता और तर्क बीच में टूटते नहीं हैं। वह सुनने वालों को न सिर्फ एक सुखद अनुभूति कराता है बल्कि एक ऊंचा और उपयोगी संदेश भी देता है। अगर हम गौर करें तो पाएंगे कि गणित भी तो ऐसे ही करता है। गणित भी किसी प्रमेय को सिद्ध करने के लिए शुरुआत में ही कोई एक संकल्पना करता है और तर्कों व अन्य प्रमेयों की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए लयबद्ध तरीके से उसे साबित करता है। इसलिए गणित सिर्फ ज्ञान ही नहीं है। यह एक संगीत भी है। इसलिए यह कथन बिल्कुल सत्य है कि गणित ज्ञान का संगीत है। □



## वर्षा वन की एक स्मृति: दीहिंग पटकाई राष्ट्रीय उद्यान की हमारी यात्रा

✍ मानवेंद्र गोगोई

अधिकारी (मानव संसाधन-विकास)

मानव संसाधन-विकास विभाग, दुलियाजान

वह एक सर्द सुबह थी दुलियाजान में, जब मेरी पत्नी और मैंने आखिरकार दीहिंग पटकाई राष्ट्रीय उद्यान घूमने का निर्णय लिया। यह वर्षा वन हमेशा से हमारे घर के करीब थी, फिर भी अपनी अनछुई सुंदरता में चुपचाप फलती-फूलती, सिर्फ थोड़ी ही दूरी पर यह कुछ रहस्यमयी और छुपी हुई सी लगती थी। असम के अन्य प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यानों के विपरीत, यह जंगल कुछ अलग था - रहस्यमयी शांति से भरपूर।

यात्रा अपने आप में ही बहुत सुकूनदायक थी। जैसे ही हम दुलियाजान की सुव्यवस्थित शहर को पीछे छोड़ते गए, दृश्य बदलने लगे - पहले हरे-भरे धान के खेत और फिर घना हरा जंगल। जैसे ही हमने जंगल में कदम रखा, हवा का एहसास ही बदल गया और चिड़ियों की गूंजती हुई चहचहाहट के साथ पूरा समा संगीतमय लग रहा था।

हम धीरे-धीरे जंगल के रास्तों पर चलते गए एक स्थानीय गाइड के साथ जो इन पगडंडियों को अपनी धड़कनों की तरह जानता था। ज्यादा देर नहीं हुई थी कि हमने पहली अद्भुत चीज देखी: भव्य और सुंदर ग्रे पीकॉक-फेज़न्ट (Gray Peacock-Pheasant), जो चुपचाप झाड़ियों के बीच से निकलता हुआ दिखा। हम सांस रोक कर उसकी धीमी, शाही चाल और तेज़ पुकार को निहारते रहे। उसने एक हल्की सी निगाह हम पर डाली, जैसे हमारी उपस्थिति को स्वीकार कर रहा हो, लेकिन वह पूरी तरह शांत और निडर था - जैसे उसे हमारी मौजूदगी पर कोई आशंका न हो।

उस सुंदर पक्षी के साथ कुछ समय बिताकर हम आगे बढ़े, और तभी दूर से भारत के एकमात्र बिना पूछ का बन्दर (Ape), हूलाक गिबन की तेज आवाज़ें सुनाई दीं। इसके बाद हमारे ऊपर की शाखाओं पर रंगों का एक विस्फोट सा हुआ - Long-tailed Broadbill, Gray-lored

Broadbill, Scarlet Minivet, Blue-winged Leafbird, Golden-fronted Leafbird, Sultan Tit, Black-throated Sunbird, White-hooded Babbler, Bay Woodpecker, Lesser Yellow-nape, Red-breasted Parakeet और कई अन्य पक्षी अपनी चमकदार रंगत और तीखी पुकारों से अपने होने का एहसास दिला रहे थे। अविश्वसनीय जैव विविधता होने के बावजूद, अन्य राष्ट्रीय उद्यानों में पर्यटकों के भीड़ वाले माहोल से दूर, यहाँ एक शांत सामंजस्य था।

दीहिंग पटकाई राष्ट्रीय उद्यान को और भी अनूठा बनाता है इसका उद्योग के साथ असामान्य सह-अस्तित्व। इस हरियाली के विस्तार में ऑयल इंडिया लिमिटेड के संचालन क्षेत्र भी मौजूद हैं। यह प्रगति और संरक्षण के बीच एक नाज़ुक संतुलन है, जिसे मानो यह जंगल बिना शिकायत के स्वीकारता है।

जैसे ही सूरज घने पेड़ों की छाया के नीचे ढलने लगा, हम इस वर्षा वन से विदा हुए। लंबे सुनहरे किरणों पेड़ों के बीच से छन रही थीं। यह केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि जैसे उस दुनिया की एक झलक थी जो अब भी याद दिलाती है कि धरती कैसे पनपती थी - आहिस्ते और अछुति। उस दिन हमने यह वादा किया कि हम अपने अधिकांश अवकाश के समय को इस जंगल को जानने और खोजने में बिताएंगे।

उस यात्रा को अब कई साल हो चुके हैं और हम आज भी उसी वादे पे अड़े हैं। हमने दीहिंग पटकाई राष्ट्रीय उद्यान में 400 से अधिक पक्षी प्रजातियों और कई जीव-जंतुओं का अवलोकन किया है। इतनी बार घूमने के बावजूद, हर बार की यात्रा एक नए रहस्य की तरह लगती है जो हर बार एक सुंदर उपहार दे जाती है। आशा है यह वर्षा वन ऐसे ही फले फुले और हमारे आने वाली पीढ़ियाँ भी इसकी शांतिमय वातावरण का उपभोग कर सके। □



## कम्फर्ट जोन

नन्द दुलाल सेन

कनिष्ठ कार्यालय सहायक - 2 (टीए)

तकनीकी लेखा-परीक्षा विभाग, दुलियाजान

"एक जहाज बंदरगाह के भीतर सुरक्षित होता है, पर वह इसके लिए तो नहीं होता।"

- ग्रेस हॉपर

उनके द्वारा कही गई पंक्तियां कम्फर्ट जोन के त्याग की आवश्यकता को ही बताती हैं, जो कि अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक ही सिद्ध होता है। अब यदि जहाज अपने बंदरगाह को डूबने के डर के कारण नहीं छोड़ेगा तो अपने वास्तविक उद्देश्यों यथा - समुद्री यात्राएँ, व्यापार, रक्षा आदि को कैसे प्राप्त कर पाएगा। अतः जहाज की ही तरह हमें भी कुछ पाने के लिए खुद को अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकालना ही पड़ता है। इस बात को हम निबंध में कई उदाहरणों के माध्यम से समझने का प्रयास करेंगे।

सर्वप्रथम हम भारतीय मिथकों के उदाहरण से शुरुआत करते हैं। हम बात करते हैं रामायण की। यदि भगवान राम अपने महल का त्याग कर वनवास नहीं गये होते तो वे रावण जैसे अन्यायी, दुराचारी व्यक्ति का वध नहीं कर पाते। इसी तरह प्रसिद्ध कविता 'रश्मिर्थी' में भी श्रेष्ठ कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर ने भी कम्फर्ट जोन को छोड़ने की महत्ता को निम्न लिखित पंक्तियों में बताया है:-

"सह धूम धाम पानी पत्थर,  
पांडव आये कुछ और निखर,  
सौभाग्य न सब दिन सोता है,  
देखे आगे क्या होता है।"

अब हम मिथकों से इतिहास की ओर प्रस्थान करते हैं। इतिहास में यू तो त्याग - बलिदान द्वारा सफलता प्राप्ति



के अनेकों उदाहरण विद्यमान हैं परंतु हम अपनी बात को कुछ महापुरुषों व भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के माध्यम से समझने का प्रयास करते हैं।

बात सर्वप्रथम महात्मा बुद्ध व महावीर जैन की करते हैं। जैसा की सर्वविदित है। बुद्ध व जैन ने विश्व को दो महान धर्म (बौद्ध धर्म व जैन धर्म) प्रदान किये। वस्तुतः इन धर्मों को प्रदान करने के लिए महात्मा बुद्ध व महावीर जैन ने अपने जीवन के सर्वसुखों का त्याग किया तथा वर्षों की कठोर तपस्या से ज्ञान प्राप्ति की।

इसी प्रकार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लक्ष्य देश की आजादी की प्राप्ति हेतु भारत के कई स्वतंत्रता सेनानियों यथा - महात्मा गांधी, पं. जवाहर लाल नेहरू, अंबेडकर जी ने कई त्याग किये। इसी प्रकार कई महान लोगों यथा- भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस, चंद्रशेखर आजाद जैसे व्यक्तियों ने तो सर्वोच्च बलिदान "देश के लिए शहादत दी"।

अब यदि ये व्यक्ति यह सोच जाते कि आजादी के आंदोलन के लिए हमें अपनी सुख सुविधाओं का त्याग करना पड़ेगा। अपने कम्फर्ट जोन को

छोड़ना पड़ेगा तो भारत आज भी गुलामी की बेड़ियों में ही जकड़ा रहता। जब हम इतिहास से आगे चलते हैं तो हम एक अच्छे समाज को इतिहास से प्रेरणा लेते हुए स्थापित करने का प्रयास करते हैं। एक बेहतरीन समाज जहाँ समानता, न्याय, निष्पक्षता, सहानुभूति जैसे गुणों की उपस्थिति हो, उसके लिए भी अनेक व्यक्तियों को त्याग करना पड़ता है अर्थात् अपने कम्फर्ट जोन को छोड़ना पड़ता है।

इसी प्रकार विद्यार्थी जीवन के उदाहरण से भी कम्फर्ट जोन के त्याग के महत्त्व को समझ सकते हैं। विद्यार्थी के लक्षणों को एक श्लोक के माध्यम से समझा जा सकता है:

"काक चेष्टा, बको ध्यानं, स्वान निद्रा तथैव चा  
अल्पाहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पंचलक्षणम् ॥"

इस श्लोक में ज्यादातर महत्त्व तो त्याग को ही दिया गया है। जैसे कम भोजन करना, घर का त्याग करना, श्वान के समान नींद अर्थात् कम नींद लेना।

वस्तुतः विद्यार्थी यदि त्याग नहीं करेगा तो वह अपने जीवन में लक्ष्य या सफलता की प्राप्ति नहीं कर पायेगा। विद्यार्थी जीवन के त्याग को डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के विद्यार्थी

जीवन के त्याग से समझा जा सकता है कि कैसे उन्होंने गरीबी की स्थिति में भी अपनी शिक्षा प्राप्ति हेतु विभिन्न त्याग किया था, जैसे- अखबार बेचना आदि।

अब प्रश्न यह है कि क्या बिना कंफर्ट जोन को छोड़े भी कुछ प्राप्त किया जा सकता है? यदि हम इस प्रश्न पर गौर करें तो हम पाते हैं कि कंफर्ट जोन में रहने की प्रवृत्ति व्यक्ति को आलसी बनाती है। वस्तुतः आलस्य से कभी भी किसी लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो पाई है।

अतः यदि व्यक्ति को अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है तो कंफर्ट जोन को छोड़ना ही पड़ेगा चाहे वह कोई भी हो।

प्लेटो ने कहा भी है कि :-

"संघर्ष के बिना कुछ भी सुंदर नहीं है।"

और भारत में तो यह बात प्रसिद्ध है ही कि :-

"करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान," □

## आयुर्वेद, प्रकृति और योग- स्वस्थ जीवन के आधार

परिस्मिता बरुआ

तकनीकी सहायक – 1 (रसायन)

रसायन विभाग, दुलियाजान

आयुर्वेद के अनुसार, शरीर, मन और आत्मा का संतुलन बनाए रखना ही उत्तम स्वास्थ्य का रहस्य है।

आयुर्वेद, प्रकृति और योग मिलकर जीवन को स्वस्थ, संतुलित और आनंदमय बनाते हैं। आयुर्वेद हमें प्रकृति प्रदत्त आहार और औषधियों की ओर ले जाता है, योग हमें शरीर और मन को संतुलित करने की शक्ति देता है, और प्रकृति हमें शुद्धता और ऊर्जा प्रदान करती है।

प्रकृति से जुड़ने से शरीर, मन और आत्मा को कई स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं। यह न केवल शारीरिक तंदुरुस्ती में मदद करता है, बल्कि मानसिक शांति और सकारात्मक ऊर्जा भी प्रदान करता है।

योग का उल्लेख वेदों, उपनिषदों और महर्षि पतंजलि के योगसूत्रों में मिलता है। भगवद गीता में भी योग के विभिन्न रूपों को समझाया गया है। आज भी प्राचीन योग परंपरा का अनुसरण करके हम अपने जीवन में शांति और स्वस्थता को बढ़ा सकते हैं। प्राचीन काल के प्रमुख योग रूप:

- राजयोग – मानसिक और आत्मिक शुद्धि के लिए ध्यान और साधना पर केंद्रित।
- हठयोग – शारीरिक संतुलन के लिए आसनो और प्राणायाम का अभ्यास।
- कर्मयोग – निःस्वार्थ कर्म और सेवा को प्राथमिकता देने वाला योग।
- भक्तियोग – ईश्वर भक्ति और आध्यात्मिक समर्पण पर आधारित।
- ज्ञानयोग – आत्मज्ञान और आत्मचिंतन का मार्ग।
- तंत्रयोग – ऊर्जा और आंतरिक शक्तियों को जागृत करने का विज्ञान।

हरे-भरे वातावरण में समय बिताने से तनाव और चिंता कम होती ताजी हवा, धूप और प्राकृतिक वातावरण में व्यायाम करने से शरीर मजबूत होता है, शरीर की जैविक घड़ी संतुलित रहती है, जिससे अच्छी नींद आती है हृदय स्वास्थ्य बेहतर होता है और रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है।

आजकल डिटॉक्स ड्रिंक एक बड़े ट्रेंड के रूप में उभर रहे हैं, लेकिन वास्तव में, इनका उपयोग हमारे पूर्वज सदियों से करते आ रहे हैं। आयुर्वेद के अनुसार, शरीर को शुद्ध करने और संतुलित बनाए रखने के लिए प्राकृतिक डिटॉक्स ड्रिंक्स का सेवन किया जाता है। ये पेय न केवल शरीर को विषाक्त पदार्थों से मुक्त करते हैं, बल्कि पाचन, ऊर्जा और रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाते हैं।

**त्रिफला पानी** – त्रिफला (आंवला, हरड़, बहेड़ा) को रातभर पानी में

भिगोकर सुबह पिएं। यह पाचन सुधारता है और शरीर को शुद्ध करता है।

**गिलोय और तुलसी का काढ़ा** – गिलोय, तुलसी, और अदरक को पानी में उबालकर शहद मिलाकर पिएं। यह इम्यूनिटी को मजबूत करता है।

**धनिया पानी** – रातभर भिगोए गए धनिया के बीज का पानी सुबह पिएं। यह शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है।

**आंवला और नींबू रस** – आंवला जूस में नींबू का रस मिलाकर पीने से शरीर को ऊर्जा मिलती है और विषैले तत्व बाहर निकलते हैं।

**जीरा और सौंफ पानी** – रातभर पानी में भिगोए गए जीरा और सौंफ का सेवन करने से पाचन तंत्र मजबूत होता है।

चिया सीड्स, कद्दू के बीज और अन्य स्वास्थ्यवर्धक बीज आयुर्वेद में पहले से मौजूद हैं और इन्हें पोषण और औषधीय गुणों के लिए सदियों से उपयोग किया जा रहा है।

**चिया सीड्स** – ऊर्जा बढ़ाने, पाचन सुधारने और शरीर को डिटॉक्स करने में सहायक हैं। आयुर्वेद में इन्हें वात और पित्त को संतुलित करने वाला माना जाता है।

**कद्दू के बीज** – आयरन, मैग्नीशियम और जिंक से भरपूर होते हैं। यह इम्यूनिटी बढ़ाने, हृदय स्वास्थ्य और पाचन में मदद करते हैं।

**अलसी के बीज** – आयुर्वेद में इन्हें पाचन सुधारने और शरीर की गर्मी को संतुलित करने के लिए उपयोग किया जाता है।

**तिल के बीज** – हड्डियों को मजबूत करने और ऊर्जा प्रदान करने में सहायक होते हैं। आयुर्वेद में इन्हें ओजस (जीवन ऊर्जा) बढ़ाने वाला माना जाता है।

**सूरजमुखी के बीज** – ये शरीर को पोषण देते हैं और एंटीऑक्सीडेंट गुणों के कारण त्वचा और बालों के लिए फायदेमंद होते हैं।

**मेथी के बीज** – पाचन तंत्र को मजबूत करते हैं और शुगर नियंत्रण में मदद करते हैं। आयुर्वेद में इन्हें अग्नि (पाचन शक्ति) बढ़ाने वाला माना गया है।

प्राचीन समय से ही ये बीज जीवनशक्ति बढ़ाने और शरीर को स्वस्थ रखने में मदद करते आ रहे हैं। लोग प्राकृतिक और आयुर्वेदिक उत्पादों की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं। हर्बल और ऑर्गेनिक पेय अब अधिक लोकप्रिय हो चुके हैं। आयुर्वेद से प्रेरित उत्पादों को सोशल मीडिया और विज्ञापनों में प्रमोट किया जाता है। हालांकि आयुर्वेद सदियों से मौजूद है, लेकिन अब इसे आधुनिक तरीकों से प्रस्तुत किया जा रहा है! □

# भारत में पेट्रोलियम क्षेत्र का भविष्य (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)

✍ राजेश चट्टोपाध्याय

कार्यालय सहायक-2 (केबी)

अनुबंध एवं क्रय विभाग

कोलकाता कार्यालय, कोलकाता

## प्रस्तावना

भारत की अर्थव्यवस्था ऊर्जा पर अत्यधिक निर्भर है, और पेट्रोलियम ऊर्जा का प्रमुख स्रोत बना हुआ है। वर्तमान समय में जब वैश्विक स्तर पर ऊर्जा संक्रमण (Energy Transition) की प्रक्रिया तेजी से चल रही है, भारत जैसे विकासशील राष्ट्रों के लिए यह और भी जटिल चुनौती बन जाती है। भारत न केवल एक बड़ा उपभोक्ता है, बल्कि दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा तेल आयातक देश भी है। पेट्रोलियम उत्पादों का उपयोग न केवल परिवहन, बल्कि उर्वरक, उद्योग, बिजली उत्पादन और घरेलू आवश्यकताओं में भी व्यापक रूप से होता है।

इस निबंध में हम भारत के पेट्रोलियम क्षेत्र की वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ, नीतियाँ, वैश्विक प्रवृत्तियाँ, तकनीकी नवाचार, नवीकरणीय ऊर्जा की भूमिका, और इन सबके संदर्भ में भविष्य की दिशा का विश्लेषण करेंगे।

## 1. भारत में पेट्रोलियम क्षेत्र की वर्तमान स्थिति

### 1.1 खपत और उत्पादन

- भारत 2024 तक प्रतिवर्ष लगभग 250 मिलियन टन कच्चे तेल की खपत करता है, जिसमें से लगभग 85% आयात किया जाता है।
- घरेलू उत्पादन में कमी और आयात पर अत्यधिक निर्भरता एक चिंताजनक स्थिति है।
- कच्चे तेल का घरेलू उत्पादन लगातार घट रहा है; 2012-13 में 38.09 MMT से घटकर 2022-23 में मात्र 29.2 MMT रह गया है।

### 1.2 तेल शोधन (Refining)

- भारत की रिफाइनिंग क्षमता लगभग 260 मिलियन टन प्रतिवर्ष है, जिससे भारत एशिया में सबसे बड़ी रिफाइनिंग क्षमताओं वाले देशों में से एक है।
- सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों में रिफाइनरी मौजूद हैं जैसे इंडियन ऑयल, रिलायंस इंडस्ट्रीज, भारत पेट्रोलियम आदि।

### 1.3 पेट्रोलियम का उपयोग :

- 40 % से अधिक पेट्रोलियम उत्पादों का उपयोग परिवहन क्षेत्र में होता है।

- विमानन, नौवहन, उद्योग, उर्वरक, और घरेलू रसोई गैस में भी इनका प्रयोग व्यापक है।

## 2. भारत की ऊर्जा सुरक्षा और पेट्रोलियम आयात पर निर्भरता

### 2.1 रणनीतिक खतरे

- खाड़ी क्षेत्र में अस्थिरता, युद्ध, वैश्विक राजनीतिक उठा-पटक भारत की तेल आपूर्ति को बाधित कर सकती है।
- तेल की वैश्विक कीमतों में अस्थिरता से भारत की अर्थव्यवस्था और चालू खाता घाटा (Current Account Deficit) पर गंभीर प्रभाव पड़ता है।

### 2.2 स्ट्रैटेजिक ऑयल रिजर्व

- भारत ने विशाखापट्टनम, मंगलुरु और पदुर में रणनीतिक तेल भंडारण स्थापित किए हैं जिनकी कुल क्षमता लगभग 5.33 MMT है।
- सरकार ने दूसरे चरण में इनकी क्षमता बढ़ाने की योजना बनाई है।

## 3. पेट्रोलियम क्षेत्र की प्रमुख चुनौतियाँ

### 3.1 पर्यावरणीय दवाव और वैश्विक जलवायु प्रतिबद्धताएँ

- पेट्रोलियम आधारित ईंधनों के कारण भारत वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में तीसरे स्थान पर है।

- भारत ने 2070 तक 'नेट जीरो' का लक्ष्य निर्धारित किया है, जो कि पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर पुनर्विचार की माँग करता है।

### 3.2 भंडारण और लॉजिस्टिक्स:

- देश में तेल भंडारण एवं वितरण की संरचना अभी भी

अधूरी और असमान है।

- भारत में पाइपलाइन नेटवर्क सीमित है। जिससे वितरण लागत बढ़ती है।

### 3.3 अन्वेषण और उत्पादन में निवेश की कमी

- पेट्रोलियम अन्वेषण क्षेत्र में निजी निवेश आकर्षित करने में भारत को कठिनाई होती है।



- OALP (Open Acreage Licensing Policy) और HELP (Hydrocarbon Exploration and Licensing Policy) के बावजूद अपेक्षित सफलता नहीं मिली।

#### 4. सरकार की नीतियाँ और पहलें

##### 4.1 जैव-ईंधन नीति 2018 :

- 2030 तक पेट्रोल में 20% एथेनॉल मिश्रण का लक्ष्य।
- यह आयात घटाने और पर्यावरणीय दुष्प्रभाव कम करने में सहायक हो सकता है।

##### 4.2 SATAT, HELP

- "Sustainable Alternative Towards Affordable Transportation" योजना के तहत कम्प्रेसड बायोगैस (CBG) को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- 2016 में शुरू की गई HELP ने नई अन्वेषण लाइसेंसिंग नीति (NELP) की जगह ली। पारंपरिक तेल और गैस, CBM, शेल तेल, गैस हाइड्रेट्स आदि सभी प्रकार के हाइड्रोकार्बन के लिए E&P के लिए एकल लाइसेंस प्रदान करता है। पिछले लाभ-साझाकरण मॉडल से राजस्व साझाकरण अनुबंध मॉडल में स्थानांतरित किया गया (यानी, राजस्व सरकार और ठेकेदार के बीच साझा किया जाता है)। लाभ-साझाकरण मॉडल में, लागत वसूली के बाद लाभ साझा किया जाता था। OALP की शुरुआत की गई, जिससे निवेशक NDR में डेटा का मूल्यांकन करके और रुचि व्यक्त करके अपनी पसंद के ब्लॉक चुन सकते हैं।

##### 4.3 राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन :

- ग्रीन हाइड्रोजन को पेट्रोलियम के विकल्प के रूप में विकसित करने पर जोर।
- 2030 तक 5 मिलियन टन हरित हाइड्रोजन उत्पादन का लक्ष्य।

##### 4.4 ऊर्जा कूटनीति

- भारत रूस, अमेरिका, अफ्रीका और मध्य एशियाई देशों के साथ ऊर्जा सहयोग बढ़ा रहा है। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसियों में भारत की भूमिका सशक्त हो रही है।

#### 5. ऊर्जा संक्रमण और नवीकरणीय ऊर्जा का प्रभाव

##### 5.1 इलेक्ट्रिक वाहनों का आगमन

- पेट्रोलियम खपत का बड़ा भाग परिवहन से आता है। EVs के प्रसार से डीजल-पेट्रोल की माँग घटेगी। FAME योजना (Faster Adoption and Manufacturing of Hybrid and Electric Vehicles) इस दिशा में मदद कर रही है।

##### 5.2 सौर और पवन ऊर्जा

- भारत 2030 तक 500 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता स्थापित करने की दिशा में अग्रसर है। इससे पारंपरिक ईंधनों की भूमिका

सीमित होती जाएगी।

#### 6. वैश्विक प्रवृत्तियाँ और भारत पर प्रभाव

- विश्व में तेल कंपनियाँ अब ऊर्जा कंपनियों के रूप में पुनः परिभाषित हो रही हैं जैसे BP, Shell, TotalEnergies आदि।
- भारत की कंपनियाँ भी हरित ऊर्जा में निवेश कर रही हैं ऑयल इंडिया लिमिटेड, इंडियन ऑयल, ओनएनजीसी, रिलायंस आदि ने सौर, हाइड्रोजन, और बायोफ्यूल में परियोजनाएँ शुरू की हैं।

#### 7. तकनीकी नवाचार और भविष्य की दिशा

##### 7.1 डिजिटल टेक्नोलॉजी

- AI, IoT, बिग डेटा और ड्रोन का उपयोग अन्वेषण, वितरण और निगरानी में बढ़ रहा है। पेट्रोलियम क्षेत्र के डिजिटलीकरण से दक्षता बढ़ेगी और लागत घटेगी।

##### 7.2 अपस्ट्रीम सेक्टर का सुदृढ़ीकरण

- घरेलू उत्पादन बढ़ाने हेतु DGH (Directorate General of Hydrocarbons) नीतियों को लचीला बना रहा है।
- अन्वेषण में निवेश आकर्षित करने के लिए राजस्व साझेदारी मॉडल पर जोर।

#### 8. संभावनाएँ और रणनीतिक दिशा

##### 8.1 पेट्रोकेमिकल और निर्यात

- भविष्य में तेल का उपयोग परिवहन से हटकर रसायन, प्लास्टिक और औद्योगिक उत्पादों में केंद्रित होगा।
- भारत की रिफाइनिंग क्षमता उसे एशिया का पेट्रोकेमिकल हब बना सकती है।

##### 8.2 हरित परिवहन :

- CNG, LNG, बायोगैस और इलेक्ट्रिक गाड़ियों के उपयोग से पेट्रोलियम पर दबाव घटेगा।
- सरकार की योजना है कि 2030 तक 30% वाहन इलेक्ट्रिक हों।

##### 8.3 निजी निवेश और PPP मॉडल

- ऊर्जा क्षेत्र में निजी कंपनियों की भागीदारी बढ़ाने हेतु PPP (Public-Private Partnership) मॉडल को सशक्त किया जा रहा है।

#### 9. पेट्रोलियम ईएंडपी में चुनौतियाँ

- पूंजी: तेल उत्पादन इकाइयाँ प्रकृति में पूंजी गहन हैं। इसके लिए महंगे उपकरण और अत्यधिक कुशल श्रमिकों की आवश्यकता होती है।
- तकनीकी: चुनौतीपूर्ण भूवैज्ञानिक संरचनाओं से पेट्रोलियम निकालने के लिए उन्नत ड्रिलिंग तकनीकों की आवश्यकता होती है।
- दुर्घटनाएँ: ईएंडपी गतिविधियों में रिसाव और अन्य दुर्घटनाओं का जोखिम शामिल है। उदाहरण के लिए, तमिलनाडु में एन्नोर तेल रिसाव की हालिया घटना।

- पर्यावरण: ड्रिलिंग, पाइपलाइनों और अन्य बुनियादी ढाँचे के कारण आवास और वन्यजीवों का नुकसान।
- सामुदायिक विस्थापन: स्थानीय समुदायों का विस्थापन, जिससे सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियाँ पैदा होती हैं।
- तेल और गैस कंपनियों के सामने आने वाली चुनौतियों का इस बात पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ रहा है कि वे अपनी रियल एस्टेट होल्डिंग्स को कैसे देखते हैं और वे अपने कर्मचारियों को किस तरह के कार्यस्थल प्रदान करते हैं। ये महत्वपूर्ण मुद्दे हैं क्योंकि इस क्षेत्र की कई कंपनियों के पास विशाल रियल एस्टेट होल्डिंग्स हैं। अधिक से अधिक ये कंपनियाँ इन होल्डिंग्स को उद्यम-व्यापी दृष्टिकोण से प्रबंधित कर रही हैं। अपनी सुविधाओं को व्यवसाय के किसी अन्य भाग की तरह चला रही हैं। वे महसूस कर रहे हैं कि सुविधाएँ और साज-सज्जा संगठन के व्यावसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक रणनीतिक उपकरण हो सकती हैं। उस फोकस के कार्यस्थल के लिए कई निहितार्थ हैं।
- पेट्रोलियम में गैसोलीन, तेल, डीजल ईंधन, केरोसिन, रिफाइंड क्लीनर और सॉल्वेंट्स जैसे सभी पेट्रोलियम-आधारित उत्पाद शामिल हैं। इन पेट्रोलियम उत्पादों के लिए अपस्ट्रीम (खोज और निष्कर्षण) और डाउनस्ट्रीम गतिविधियों (रिफाइनिंग और मार्केटिंग) में शामिल संगठन दुनिया की कुछ सबसे अधिक लाभदायक कंपनियों में से हैं।
- चाहे वे अपस्ट्रीम या डाउनस्ट्रीम गतिविधियों में शामिल हों, चाहे वे सार्वजनिक निगम हों या राज्य के स्वामित्व वाली कंपनियाँ, तेल उद्योग के खिलाड़ियों को उन महत्वपूर्ण मुद्दों और प्रमुख रुझानों के संदर्भ में काम करना चाहिए जो तेल के दीर्घकालिक दृष्टिकोण को आकार दे रहे हैं।
- तेल कंपनियों, सार्वजनिक निगमों और राज्य तथा गैर-राज्य स्वामित्व वाले उद्यमों को वैश्विक औद्योगिक विस्तार के कारण पेट्रोलियम उत्पादों की बढ़ती मांग का सामना करना पड़ रहा है।
- एक ओर, "रूढ़िवादी" तेल (उत्पादन कुओं के माध्यम से भूमिगत हाइड्रोकार्बन भंडारों से उत्पादित) प्राप्त करने के लिए श्रम ने तेल कंपनियों को प्रौद्योगिकी और उपकरणों में और अधिक भारी निवेश करने के लिए प्रेरित किया है। दूसरी ओर, इन फर्मों ने "असामान्य" तेल के उत्पादन में निवेश बढ़ाया है, जिसमें तेल रेत, शेल तेल और अतिरिक्त भारी कच्चे तेल शामिल हैं, जिनमें से कुछ को कृत्रिम कच्चे तेल का उत्पादन करने के लिए अतिरिक्त प्रसंस्करण की आवश्यकता होती है।
- महंगी प्रौद्योगिकी, उपकरण और प्रक्रियाओं में निवेश के जोखिम को फैलाने के लिए फर्म संयुक्त उद्यम संबंधों में प्रवेश कर रही हैं, जो पूरे उद्योग को स्वस्थ रखने के लिए प्रतिस्पर्धियों के बीच बुनियादी ढाँचे के जोखिम को फैलाने के लिए डिजाइन किए गए हैं। कुछ मामलों में, फर्मों को अत्यधिक तकनीकी अन्वेषण और उन्नत

उत्पादन के लिए संसाधनों का विस्तार करने के लिए विलय या अधिग्रहण की आवश्यकता होती है।

## 10. पेट्रोलियम ईएंडपी को बढ़ाने के लिए उठाए गए कदम

- तेल और प्राकृतिक गैस संसाधनों के सुदृढ़ प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय (डीजीएच) का गठन किया गया।
- ई-प्लेटफॉर्म पर संविदात्मक प्रस्तुतियों के डिजिटलीकरण और मानकीकरण द्वारा अनुमोदन प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित किया गया है।
- राष्ट्रीय डेटा रिपॉजिटरी (एनडीआर), जिसे 2017 में जनता के लिए लॉन्च किया गया था, ईएंडपी गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले सरकारी डेटा बैंक के रूप में कार्य करता है।
- निवेशकों के लिए ईएंडपी डेटा तक 24x7 पहुंच के लिए वर्चुअल डेटा रूम के साथ क्लाउड-आधारित, अत्याधुनिक सुविधा के लिए एनडीआर का उन्नयन प्रगति पर है।
- भारत हाइड्रोकार्बन विजन 2025 के अनुसार, हाइड्रोकार्बन के विकास के लिए व्यापक रूपरेखा/लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं।
- तेल और प्राकृतिक गैस क्षेत्रों की अन्वेषण गतिविधियों, पेट्रोलियम उत्पादों और प्राकृतिक गैस के विपणन से संबंधित बुनियादी ढाँचे आदि के लिए स्वचालित मार्ग के माध्यम से 100% एफडीआई।
- राष्ट्रीय भूकंपीय कार्यक्रम (एनएसपी) का उद्देश्य पूरे भारत में सभी तलछटी घाटियों में नए सिरे से मूल्यांकन करना है।

## 11. आगे की राह

- निवेश: वैश्विक कंपनियों के साथ तेल और गैस परिसंपत्तियों के संयुक्त ईएंडपी के लिए अवसरों का पता लगाना। साथ ही, स्थिर कर व्यवस्था और कर छूट से अधिक निजी निवेश आकर्षित करने में मदद मिलेगी।
- उद्योग-अकादमिक सहयोग: यह नवीनतम शोध और प्रौद्योगिकियों तक पहुंच प्रदान करता है, सिद्धांत और व्यवहार के बीच की खाई को पाटता है।
- उदाहरण के लिए, अमगुरी और ऊपरी असम के आस-पास के क्षेत्रों में एआईएमएल के अनुप्रयोग के लिए डीजीएच और वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।
- स्थायी ईएंडपी: उदाहरण के लिए, ऑयल इंडिया लिमिटेड ने असम राज्य जैव विविधता बोर्ड और आईयूसीएन के साथ साझेदारी करके स्थायी तेल उत्पादन के लिए कदम उठाए हैं।
- उन्होंने डिब्रू सैखोवा राष्ट्रीय उद्यान (असम) पर तेल उत्पादन के प्रभाव का अध्ययन करने और निष्कर्षों के जवाब में एक तेल उत्पादन योजना विकसित करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए।
- तेल रिसाव को नियंत्रित करें: तेल-ज़ेपर जैसी नवीनतम तकनीकों

का उपयोग करके। रिसाव की रोकथाम और प्रतिक्रिया प्रोटोकॉल पर उद्योग कर्मियों के लिए व्यापक प्रशिक्षण प्रदान करें।

- समुदाय पर प्रभाव को कम करना: परियोजना नियोजन में स्थानीय समुदायों पर संभावित प्रभावों को समझने के लिए प्रभाव आकलन करना शामिल होना चाहिए, जिसमें लोगों का स्वास्थ्य, आजीविका आदि शामिल हैं।
- ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण- तेल आयात पर निर्भरता कम करने हेतु वैकल्पिक स्रोतों को बढ़ावा। गहन अन्वेषण और उत्पादन घरेलू उत्पादन बढ़ाने हेतु तकनीकी नवाचार और निजी निवेश को प्रोत्साहन।
- वितरण तंत्र का आधुनिकीकरण पाइपलाइन और डिजिटल लॉजिस्टिक्स नेटवर्क का विस्तार।
- जनजागरूकता अभियान ऊर्जा संरक्षण एवं वैकल्पिक ईंधन के उपयोग को लेकर जनसंख्या में जागरूकता फैलाना।

- स्थानीयकरण - उपकरण निर्माण, R&D, और तकनीक में आत्मनिर्भरता को बढ़ाना।

#### निष्कर्ष

भारत में पेट्रोलियम क्षेत्र एक महत्वपूर्ण परिवर्तन की दहलीज पर खड़ा है। एक ओर बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताएँ हैं, तो दूसरी ओर पर्यावरणीय प्रतिबद्धताएँ और वैश्विक ऊर्जा संक्रमण का दबाव है। ऐसे में भारत को पेट्रोलियम क्षेत्र में संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है जिसमें अल्पकालिक ऊर्जा सुरक्षा और दीर्घकालिक सतत विकास दोनों सुनिश्चित हों।

भविष्य में भारत का पेट्रोलियम क्षेत्र अपने पारंपरिक स्वरूप से हटकर एक बहुआयामी ऊर्जा संरचना का हिस्सा बनेगा, जहाँ हरित ईंधनों, तकनीकी नवाचार, और रणनीतिक नीति नियोजन की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। यदि सरकार, निजी क्षेत्र और समाज समन्वय के साथ कार्य करें, तो भारत अपनी ऊर्जा यात्रा को सुरक्षित, सुलभ और सतत बना सकता है। □

## विश्व पर्यावरण दिवस 2025: प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करने की दिशा में एक कदम

✍️ अभिजीत छेत्री

कनिष्ठ कार्यालय सहायक - 2 (संविदा)

संविदा विभाग, दुलियाजान

विश्व पर्यावरण दिवस, जो हर साल 5 जून को मनाया जाता है, पृथ्वी के पर्यावरणीय संकटों के प्रति जागरूकता बढ़ाने और संरक्षण के लिए वैश्विक प्रयासों को प्रेरित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) द्वारा 1973 में इसकी शुरुआत की गई थी, और तब से यह दिन पर्यावरणीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मनाया जाता रहा है।

### 2025 का विषय: "प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करें"

वर्ष 2025 के विश्व पर्यावरण दिवस का मुख्य विषय "प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करें" है। यह विषय समुद्रों, नदियों, और भूमि में प्लास्टिक कचरे के बढ़ते संकट को उजागर करता है, जो जैव विविधता, जलवायु परिवर्तन, और पारिस्थितिकी तंत्र पर गंभीर प्रभाव डालता है। इस वर्ष, दक्षिण कोरिया इस वैश्विक उत्सव की मेजबानी कर रहा है, जो पर्यावरणीय संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

### पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत योगदान

विश्व पर्यावरण दिवस केवल एक दिन का उत्सव नहीं है, बल्कि यह हमें अपने दैनिक जीवन में पर्यावरणीय जिम्मेदारी निभाने की प्रेरणा देता है। हम निम्नलिखित उपायों के

माध्यम से पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे सकते हैं:

- **प्लास्टिक का उपयोग कम करें:** पुनः उपयोग योग्य बैग और कंटेनरों का उपयोग करें।
- **वृक्षारोपण करें:** अपने आस-पास वृक्षारोपण कार्यक्रमों में भाग लें और अधिक से अधिक पौधे लगाएं।
- **जल और ऊर्जा की बचत करें:** जल और ऊर्जा के उपयोग में विवेकपूर्णता अपनाएं।
- **स्वच्छता अभियान में भाग लें:** स्वच्छता अभियानों में भाग लेकर अपने परिवेश को स्वच्छ बनाएं।

#### निष्कर्ष

विश्व पर्यावरण दिवस 2025 हमें यह याद दिलाता है कि पृथ्वी हमारी साझा धरोहर है, और इसके संरक्षण की जिम्मेदारी हम सभी की है। प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करने के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं। आइए, हम सभी मिलकर इस दिशा में कदम बढ़ाएं और एक स्वच्छ, हरा-भरा और स्वस्थ पर्यावरण की ओर अग्रसर हों।

"प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करें, पृथ्वी को बचाएं!" □



## सिंगापुर: अनुशासन, नवाचार और सांस्कृतिक संगम का पथ

✍ संदीप चक्रवर्ती

वरिष्ठ प्रबंधक (सीएंडपी), सीएंडपी विभाग

पाइपलाइन क्षेत्र, गुवाहाटी

यह यात्रा वृत्तांत मेरा और मेरे परिवार के सिंगापुर यात्रा पर आधारित है। यह यात्रा न केवल आधुनिकता और प्राकृतिक सौंदर्य का संगम थी, बल्कि यह एक ऐसे अनुभव की कहानी है जो मन, शरीर और आत्मा—तीनों को झंकृत कर गई।

### आगमन: सिंगापुर की धरती पर पहला कदम

16 अप्रैल की शाम, जैसे ही हम सिंगापुर के चांगी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरे, वहाँ की स्वच्छता, अनुशासन और तकनीकी दक्षता ने हमें तुरंत प्रभावित किया। “सिंगापुर में स्वागत है” की मुस्कान लिए हुए एयरपोर्ट स्टाफ के साथ हमारा पहला संवाद हुआ। हॉलिडे इन नोवेना होटल की ओर रवाना होते समय रात की रोशनी में चमकता शहर हमें एक सपने की तरह प्रतीत हुआ।



### पहला दिन: यूनिवर्सल स्टूडियोज़ और नाइट सफारी की मस्ती

17 अप्रैल की सुबह उत्साह से भरी थी। सुबह 9 बजे यूनिवर्सल स्टूडियोज़ की ओर प्रस्थान हुआ। जैसे ही पार्क में प्रवेश किया, आंखों के सामने एक जादुई दुनिया बिखर गई। ट्रांसफॉर्मर्स की सवारी, द ममी की भूमिगत रेलगाड़ी और शेरक की जल दुनिया—हर एक राइड में रोमांच और हंसी की खनक थी।



शाम होते-होते हम पहुँचे नाइट

सफारी के लिए। ट्राम की सवारी करते हुए जब गैंडे, हिरण और सिंह हमारी आँखों के सामने से गुजरे, तो ऐसा लगा जैसे जंगल हमारे साथ सांसें ले रहा है। “प्रकृति को देखने का सबसे अच्छा तरीका है, उसके साथ घुल जाना।” यह विचार तब चरम पर था।

### दूसरा दिन: गार्डन बाय द बे—प्रकृति की गोद में

18 अप्रैल की दोपहर का समय गार्डन बाय द बे के नाम रहा। फ्लावर

डोम में दुनिया भर के फूलों की खुशबू ने हमारी इंद्रियों को जैसे सम्मोहित कर लिया। बादलों से भरे क्लाउड फॉरेस्ट में चलते हुए पानी की फुहारों और ठंडी हवा ने थकान को पल भर में उड़ा दिया।



यह वह क्षण था जब हमने “जिंदगी की तेज़ रफ्तार में कभी-कभी ठहराव भी जरूरी होता है” का असली मतलब महसूस किया।

### तीसरा दिन: सेंटोसा द्वीप का जादू

19 अप्रैल की सुबह से ही रोमांचक थी। केबल कार की ऊँचाई से नीचे दिखता नीला समुद्र और हरे द्वीपों का दृश्य मन मोह लेने वाला था। SEA Aquarium में रंग-बिरंगी मछलियों की दुनिया में बच्चों की तरह खो जाना भी एक अनुभव था।



मैडम तुसाद में जब हमने शाहरुख खान और ब्रूस ली की मोम की प्रतिमाओं के साथ तस्वीरें खिंचवाई, तो लगा जैसे हम खुद भी किसी फिल्मी सीन का हिस्सा हैं। और शाम को "Wings of Time" शो की रोशनी, पानी और संगीत का संगम हमारे मन में स्थायी छाप छोड़ गया।

### चौथा दिन: शहर की सैर और क्रूज़ की शुरुआत

20 अप्रैल को सिंगापुर सिटी टूर ने हमें शहर की आत्मा से रूबरू कराया। मेरलायन पार्क, मरीना बे सैंड्स और चाइनाटाउन—हर जगह की अपनी कहानी थी, अपना स्वाद था।



दोपहर बाद, हम पहुँचे मरीना बे क्रूज सेंटर। जैसे ही क्रूज रवाना हुआ, समुद्र की ठंडी हवा और डेक पर खड़े होकर दूर जाती शहर की लाइट्स ने दिल को एक अलग ही एहसास दिया—जैसे समय थम गया हो।

## पाँचवां दिन: समुद्र की गोद में

21 अप्रैल पूरा दिन समुद्र में क्रूज पर बीता। सुबह की कॉफी समुद्र की लहरों के संगीत के साथ, और दिन भर बच्चों की हँसी, स्वादिष्ट भोजन और मनोरंजन ने हमें जैसे किसी राजा की तरह महसूस कराया। कभी-कभी जीवन को बस जी लेने देना चाहिए—यह विचार इस दिन बार-बार मन में आया।



## छठा दिन: वापसी की ओर

22 अप्रैल को जैसे ही क्रूज ने सिंगापुर तट को छुआ, दिल में एक अजीब सा खालीपन था। हम अपने होटल नहीं बल्कि सीधे एयरपोर्ट की ओर रवाना हुए। लेकिन मन में वो सारे दृश्य घूम रहे थे—यूनिवर्सल स्टूडियोज की चिल्लाहट, क्लाउड फॉरेस्ट की ठंडी बूँदें, केबल कार की ऊँचाई, और क्रूज की शामें।

## अंत में...

इस यात्रा ने हमें एक सीख दी—“यात्रा का असली उद्देश्य नया अनुभव पाना नहीं, बल्कि एक नया नज़रिया पाना होता है।”

सिंगापुर एक ऐसा देश है जहाँ अनुशासन, तकनीक और प्रकृति तीनों का अद्भुत संतुलन है। हमारे परिवार के लिए यह केवल एक अवकाश नहीं था, बल्कि एक साथ बिताए अनमोल क्षणों की सौगात थी।

## 1. समृद्ध अनुभवों की झलकियाँ

दूरबीन से भी दूर तक दिखता अनुशासन: चांगी एयरपोर्ट पर सुव्यवस्थित प्रोसेसिंग ने यह सिखाया कि “समय की पाबंदी” केवल शब्द नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आदर्श है।

डिजिटल देश: स्मार्ट नेशन पहल के अंतर्गत हर कोने में मुफ्त वाई-फाई, कैशलेस लेनदेन



और ई-गवर्नेंस ने हमें भविष्य की दुनिया का अनुभव कराया—जहाँ सरकार और नागरिक की दूरी एक क्लिक की रह गई है।

हरियाली व टेक्नोलॉजी का मेल: गार्डन बाय द बे की सुपरट्री ग्रोव में जब रात में लाइट शो और संगीत की धुनें बिखरीं, तो लगा जैसे प्रकृति ने उच्चतम तकनीक से हाथ मिलाया हो।

समुद्र से संवाद: मरीना बे सैंड्स तट पर खड़े होकर, बीच की लहरों की आवाज़ और शहर की रोशनी के बीच एक अद्वितीय शांति मिली, जो कहते हैं—“जहाँ जल मिलता है आसमान से, वहाँ मिलती है असीम संभावनाएँ।”

## 2. क्यों सिंगापुर विश्व के सबसे विकसित राष्ट्रों में शुमार?

**अर्थव्यवस्था का चक्रवृद्धि सूत्र:** वित्तीय सेवा, लॉजिस्टिक्स और हाई-टेक मैन्युफैक्चरिंग में मजबूत आधारदंड ने देश को ग्लोबल हब बना दिया।

**नीतिगत स्थिरता व पारदर्शिता:** “कम बोलो, ज्यादा करो” की नीति ने भ्रष्टाचार को न्यूनतम पर रोक रखा। विश्व में सार्वजनिक संस्थानों की विश्वसनीयता में सिंगापुर शीर्ष पर है।

**शिक्षा और कौशल विकास:** नानयांग और नेशनल यूनिवर्सिटी जैसे विश्व-स्तरीय संस्थानों ने युवा प्रतिभाओं को ग्लोबल प्लेटफॉर्म प्रदान किया। भू-राजनीतिक समझदारी: सीमित प्राकृतिक संसाधनों के बावजूद, नौवहन व वाणिज्यिक मार्गों पर नियंत्रण एवं द्विपक्षीय समझौतों ने सिंगापुर को मजबूती दी।

## 3. इतिहास और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

इतिहास का पटल: 1819 में सर स्टैमफोर्ड रैफल्स के आगमन के साथ लंदन और चीन-भारत व्यापार मार्ग का केंद्र बनने की यात्रा शुरू हुई। 1965 में मलेशिया से पृथक्करण के बाद, छोटे-से द्वीप ने अपनी आत्म-निर्भरता और राष्ट्रीय पहचान को नया आयाम दिया।

बहुजातीयता का संगम: चीनी, मलय, भारतीय और यूरोपीय वर्गों का सामंजस्य इस द्वीप राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर है। त्योहारों का रंग, खानपान का स्वाद और भाषाओं की लय में इस विविधता का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है।

आधुनिकता में जड़े रूढ़ियाँ: “पारंपरिकता का आदर, प्रगति का पथ” सिंगापुर की

संस्कृति का मूल मंत्र है—जहाँ लोकनृत्य से लेकर आधुनिक आर्ट इन्स्टॉलेशन तक सबका समावेश है।

### निष्कर्ष:

सिंगापुर यात्रा ने हमें दिखाया कि चाहे भू-आकृतिक सीमाएँ कितनी भी संकीर्ण क्यों न हों, अनुशासन, नवाचार और बहुसांस्कृतिक संवाद देश को विश्व पटल पर अग्रसर कर देते हैं। जैसा कि प्रोफेसर क्लेटन क्रिस्टेंसन ने कहा था,

“इनोवेशन ही प्रगति की पहली सीढ़ी है।”

सिंह द्वीप के इस उपवन में हमने अनुशासन और नवाचार दोनों का स्वाद चखा, और जाना कि असली विकास का मतलब केवल इमारतों की ऊँचाई नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता और नीति की स्पष्टता भी है।

“जीवन एक यात्रा है, मंज़िल नहीं।” — राल्फ वाल्डो इमर्सन इस विचार को पूरी तरह जीकर हम लौटे, दिल में ढेर सारी यादें और मन में अगली यात्रा की योजना लिए। □

## राजभाषा हिन्दी: विकास यात्रा और वर्तमान प्रासंगिकता

✍ सत्यवीर सिंह गुर्जर

अधीक्षण अभियंता (उत्पादन)

राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर

### भूमिका

भारत एक बहुभाषी देश है, जहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित हैं। ऐसी विविधता में एक ऐसी भाषा की आवश्यकता हमेशा महसूस की गई जो सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बाँध सके। यही भूमिका हिन्दी ने निभाई है। हिन्दी न केवल भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, बल्कि 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा द्वारा इसे राजभाषा का दर्जा भी प्रदान किया गया। हिन्दी आज भारत की सांस्कृतिक एकता, प्रशासनिक कार्य, और जन-संवाद का सशक्त माध्यम बन चुकी है।

### हिन्दी का सामान्य परिचय

हिन्दी भाषा इंडो-आर्यन भाषा परिवार का सदस्य है और इसका विकास

संस्कृत व अपभ्रंश से हुआ है। ब्रज, अवधी और खड़ी बोली जैसे अनेक क्षेत्रीय रूपों से समृद्ध होकर आज यह आधुनिक खड़ी बोली के रूप में प्रयुक्त होती है। हिन्दी की लिपि देवनागरी है, जिसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अत्यंत उन्नत माना जाता है। वर्तमान में यह लगभग 60 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है, जिससे यह विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन गई है।

### राजभाषा के रूप में हिन्दी

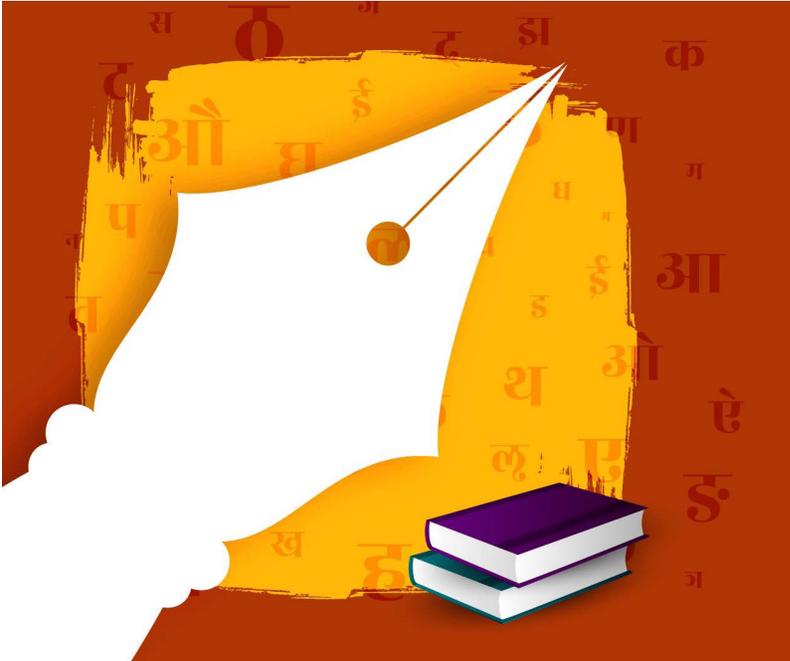
भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया है। यद्यपि भारत की कोई राष्ट्रभाषा नहीं है, परन्तु प्रशासनिक कार्यों की भाषा के रूप में हिन्दी को विशेष महत्व प्राप्त है। केन्द्रीय सरकार के कार्य हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में किए जाते हैं, पर हिन्दी को प्राथमिकता दी जाती है।

### हिन्दी को राजभाषा बनाने में योगदान देने वाले महापुरुष

- महात्मा गांधी हिन्दी को “जनता की भाषा” मानते थे।
- बाल गंगाधर तिलक ने हिन्दी को राष्ट्रीय एकता का माध्यम बताया।
- जवाहरलाल नेहरू ने हिन्दी के तकनीकी विकास और प्रचार को समर्थन दिया।
- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने संविधान सभा में हिन्दी को राजभाषा बनाने की जोरदार वकालत की।

### हिन्दी के विकास के तीन प्रमुख चरण

**प्रारम्भिक काल (10वीं-15वीं शताब्दी):** संतकवियों – कबीर, तुलसीदास, सूरदास आदि ने हिन्दी को जनभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया।



**मध्यकाल (16वीं-19वीं शताब्दी):** हिन्दी साहित्य में भक्ति, श्रृंगार, नीति आदि विषयों पर महत्वपूर्ण रचनाएँ हुईं। आधुनिक गद्य लेखन का प्रारंभ भी इसी काल में हुआ।

**आधुनिक काल (20वीं शताब्दी से अब तक):** हिन्दी पत्रकारिता, प्रशासन, शिक्षा, तकनीक और डिजिटल माध्यमों में विस्तारित हो चुकी है। अब यह एक संस्थानिक भाषा बन चुकी है।

हिन्दी के सांविधिक प्रावधान

**राजभाषा अधिनियम, 1963 (Official Language Act, 1963):**

हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों को केन्द्र सरकार के कार्यों की भाषा के रूप में मान्यता।

जब तक सभी राज्य हिन्दी को स्वीकार नहीं करते, अंग्रेज़ी सहभाषा बनी रहेगी।

**राजभाषा नियम, 1976 (Official Language Rules, 1976):**

**भारत को तीन राजभाषा क्षेत्रों में बाँटा गया:**

- क्षेत्र 'क': हिन्दी मातृभाषा वाले राज्य (जैसे यूपी, बिहार)।
- क्षेत्र 'ख': जिन राज्यों ने हिन्दी को आंशिक रूप से अपनाया (जैसे पंजाब, महाराष्ट्र)।
- क्षेत्र 'ग': जहाँ हिन्दी का प्रयोग सीमित है (जैसे तमिलनाडु, केरल)।

**हिन्दी के विकास के लिए सरकार द्वारा उठाए गए प्रमुख कदम**

- राजभाषा विभाग (1975): हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु गृह मंत्रालय के अंतर्गत गठित।
- केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय (1960): हिन्दी के मानकीकरण व प्रचार के लिए कार्यरत।
- राजभाषा समिति (1955): संसद की यह समिति हिन्दी प्रयोग की समीक्षा करती है।
- हिन्दी सलाहकार समितियाँ: सभी मंत्रालयों/विभागों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देती हैं।
- तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली आयोग: तकनीकी शब्दों को हिन्दी में सरल रूप देने के लिए।
- हिन्दी शिक्षण योजना: गैर-हिन्दी भाषी कर्मचारियों को हिन्दी सिखाने हेतु।

- हिन्दी दिवस और पखवाड़ा (14 सितम्बर): हर वर्ष मनाया जाता है ताकि लोगों में हिन्दी के प्रति जागरूकता और सम्मान उत्पन्न हो।
- डिजिटल माध्यम: राजभाषा पोर्टल, हिन्दी टूल्स, अनुवाद सॉफ्टवेयर आदि के माध्यम से तकनीकी क्षेत्रों में हिन्दी को सक्षम बनाया जा रहा है।

**हिन्दी के प्रचार-प्रसार के उपाय**

- शासकीय प्रयास: हिन्दी कार्यशालाएँ, पखवाड़ा, प्रतियोगिताएँ आदि।
- शिक्षा के माध्यम से: हिन्दी को विद्यालयों व उच्च शिक्षा में अनिवार्य रूप में पढ़ाया जाना।
- तकनीक और सोशल मीडिया: इंटरनेट, मोबाइल ऐप्स व यूट्यूब आदि पर हिन्दी की उपस्थिति।
- सिनेमा और मीडिया: हिन्दी फिल्मों, धारावाहिक व समाचार पत्रों ने हिन्दी को जन-जन तक पहुँचाया।

**विकास में बाधाएँ**

- अंग्रेज़ी का बढ़ता प्रभाव।
- क्षेत्रीय भाषाओं की अस्मिता की चिंता।
- हिन्दी की तकनीकी शब्दावली की कठिनता।
- शासकीय स्तर पर व्यवहारिक उदासीनता।

**समाधान और सुझाव**

- हिन्दी को कार्य की नहीं, जीवन की भाषा बनाया जाए।
- सरल और जनप्रिय शब्दों का प्रयोग बढ़ाया जाए।
- शिक्षा के आरंभिक स्तर से ही हिन्दी के प्रति सम्मान की भावना जगाई जाए।
- निजी क्षेत्र में भी हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाए।

**उपसंहार**

हिन्दी केवल एक भाषा नहीं, भारत की आत्मा है। यह हमारी पहचान, संवेदनशीलता और एकता का प्रतीक है। भारत को यदि सशक्त और समन्वित बनाना है तो हिन्दी को केवल राजभाषा नहीं, राष्ट्र गौरव की भाषा बनाना होगा। इसके लिए आवश्यक है कि हम सब हिन्दी को केवल उपयोग की नहीं, गर्व की भाषा मानें और उसके प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान दें। □

## भ्रष्टाचार : राष्ट्र के विकास में एक बाधा

✍️ तामश्री सैकिया बोरा  
आश्रित- ऋतुराज बोरा  
सामग्री विभाग, दुलियाजान

"भ्रष्टाचार को पकड़ना बहुत कठिन काम है,  
लेकिन मैं पूरे जोर के साथ कहता हूँ कि  
यदि हम इस समस्या से गंभीरता और  
दृढ़ संकल्प के साथ नहीं निपटते तो हम  
अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने में असफल होंगे।  
- लाल बहादूर शास्त्री

**प्रस्तावना :** भ्रष्टाचार का मतलब इसके नाम में ही छुपा है भ्रष्टाचार अर्थात भ्रष्ट + आचारा। भ्रष्ट यानी बुरा या बिगड़ा हुआ तथा आचार का मतलब है आचरण। अर्थात भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है वह आचरण जो किसी भी प्रकार से अनैतिक और अनुचित हो। जब कोई व्यक्ति न्याय व्यवस्था के मान्य नियमों के विरुद्ध जाकर अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए गलत आचरण करने लगता है तो वह व्यक्ति भ्रष्टाचारी कहलाता है। हमारे देश में भ्रष्टाचार आज से नहीं बल्कि कई सदियों से चला आ रहा रहा है और यह दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है जिसके कारण हमारे देश की हालत खराब होती जा रही है। आज भारत जैसे सोने की चिड़िया कहलाने वाले देश में भ्रष्टाचार अपनी जड़े फैला रहा है। आज पूरी दुनिया में भारत भ्रष्टाचार के मामले में 34 वें स्थान पर है। भ्रष्टाचार में मुख्य घूस यानी रिश्वत, चुनाव में धांधली, ब्लैकमेल करना, टैक्स चोरी, झूठी गवाही, झूठा मुकदमा, परीक्षा में नकल, परीक्षार्थी का गलत मूल्यांकन, हफ्ता वसूली, न्यायाधीशों द्वारा पक्षतापूर्ण निर्णय, पैसे

लेकर वोट देना, वोट के लिए पैसा और शराब आदि बांटना, पैसे लेकर रिपोर्ट छापना अपने कार्यों को करवाने के लिए नकद राशि देना यह सब भ्रष्टाचार ही है।

### भ्रष्टाचार के कारण:-

1. असंतोष - जब किसी को अभाव के कारण कष्ट होता है तो वह भ्रष्ट आचरण करने के लिए विवश हो जाता है।
2. स्वार्थ और असमानता :- असमानता, आर्थिक, सामाजिक या सम्मान, पह-प्रतिष्ठा के कारण भी व्यक्ति अपने आपको भ्रष्ट बना लेता है। हीनता और ईर्ष्या की भावना से शिकार हुआ व्यक्ति भ्रष्टाचार को अपनाने के लिए विवश हो जाता है।
3. भ्रष्ट राजनीति के कारण हमारे देश में हर दूसरा राजनेता भ्रष्ट है, उनकी छवि कलंकित है फिर भी वे राजनेता बने हुए हैं और सरकार चला रहा है।
4. भाई भतीजावाद के कारण बड़े अफसर अपने पदों का दुरुपयोग करके अपने रिश्तेदारों को नौकरी दिलवा देते हैं, चाहे वह व्यक्ति उस नौकरी के काबिल ही न हो, जिससे देश में बेरोजगारी तो फैलती ही है।
5. झूठे दिखावे व प्रदर्शन के लिए।
6. झूठे सामाजिक प्रतिष्ठा पाने के लिए।
7. अधिक परिश्रम किये बिना धनार्जन की चाहत ।
8. राष्ट्रभक्ति का अभाव और मानवीय संवेदनाओं की कमी ।
९. लचीली कानून व्यवस्था और नैतिक मूल्यों में आथी भारी गिरावट के कारण।

**भ्रष्टाचार राष्ट्र के विकास में एक बाधा -** भ्रष्टाचार न केवल हमारे निजी जीवन के लिए आभिशाप है बल्कि यह राष्ट्र के विकास में भी बाधक है। इसके कारण हमारे देश की आर्थिक प्रगति को भी नुकसान पहुंचता है। भ्रष्टाचार दीमक की तरह है जो कि धीरे-धीरे हमारे देश को खोखला करता जा रहा है। आज हमारे देश में प्रत्येक सरकारी कार्यालय, गैर-सरकारी कार्यालय और राजनीति में भ्रष्टाचार कूट-कूट



कर भरा हुआ है जिसके कारण आम आदमी बहुत परेशान है। भ्रष्टाचार के कारण हमारे देश का आर्थिक विकास रुक सा गया है और हर क्षेत्रों में दूसरे देशों की तुलना में पिछड़ता जा रहा है। भ्रष्टाचार के कारण ही आज भी हमारे गांव तक तक बिजली, पानी और सड़क जैसा मूलभूत सुविधाएँ नहीं पहुंच पाई है। अधिकांश धन कुछ लोगों के पास होने पर गरीब-अमीर की खाई दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। सरकार द्वारा बनाई गई योजनाओं का लाभ भ्रष्टाचार के कारण गरीबों तक पहुँच ही नहीं पाता है। भ्रष्टाचार के कारण भाई भतीजा वाद को बढ़ावा मिलता है, जिसके कारण अयोग्य लोग भी ऐसे पदों पर विद्यमान रहते हैं। इसके कारण किसानों को उनकी फसल का सही मूल्य नहीं मिल पाता है और वे कर्ज के कारण आत्महत्या करने को मजबूर हो जाते हैं। भ्रष्टाचार के कारण कालाबाजारी को बढ़ावा मिलता है। कम कीमत का सामान ऊँची कीमत में बेचा जाता है। माफिया लोगों की पहुँच बड़े नेताओं तक होने के कारण वे अवैध धंधे करते हैं, जिसके कारण जन और धन दोनों की बर्बादी होती है। भ्रष्टाचार के कारण अनेक परियोजनाएँ तो अधूरी रह जाती हैं और सरकारी खजाने का करोड़ों रुपया व्यर्थ चला जाता है। भ्रष्टाचार के कारण विश्व में हमारे देश की छवि बहुत ही खराब हो चुकी है। इसके कारण कई विदेशी देश हमारे देश के साथ व्यापार नहीं करना चाहते हैं। सरकार द्वारा भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कोई सख्त नियम नहीं बनाए जाने के कारण भ्रष्ट लोगों के हौसले दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं जिसके कारण पहले की अपेक्षा वर्तमान में घोटालों की संख्या बढ़ गई है।

**भ्रष्टाचार को रोकने के उपाय :-** भ्रष्टाचार एक संक्रामक रोग की तरह है। समाज में विभिन्न स्तरों पर फैले भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कठोर दंड-व्यवस्था की जानी चाहिए। आज भ्रष्टाचार की स्थिति यह है कि व्यक्ति रिश्त के मामले में पकड़ा जाता है और रिश्त देकर ही छूट जाता है। चुनाव व्यवस्था को और भी आसान तथा कम खर्चीला बनाया जाए ताकि समाज-सेवा तथा लोककल्याण से जुड़े लोग भी चुनावों में भाग ले सकें। प्रशासनिक मामलों में जनता को भी शामिल किया जाना चाहिए और प्रशासनिक कार्य के लिए लोकपाल स्वतंत्र रूप से कार्य करें ताकि भ्रष्टाचार को रोका जाए। भ्रष्टाचार करने वाला अपराधी चाहे कोई भी व्यक्ति हो, उसे कठोर से कठोर दण्ड दिया जाए। कानून संक्षिप्त और कारगर हो, लचीला न हो कर कठोर हो। अगर हमें भ्रष्टाचार

से मुक्त देश चाहिए तो हमें लोगों को भ्रष्टाचार के प्रति जागरूक करना होगा। ग्रामीण इलाकों के लोगों को तो पता ही नहीं चलता कि उनके साथ कब कोई बेईमानी कर गया। इसलिए गांव-गांव जाकर लोगों को भ्रष्टाचार के बढ़ते हुए जाल के बारे में बताना होगा। शिक्षा के अभाव के कारण ही लोग अच्छा जनप्रतिनिधि नहीं चुन पाते हैं, जिसके कारण उन्हें रिश्तखोरी और भ्रष्टाचार जैसी बीमारियों से जूझना पड़ता है। हमारे चुनाव आयोग को भ्रष्टाचारी नेताओं को चुनाव नहीं लड़ने देना चाहिए। लेकिन नियमों के ढील के कारण भ्रष्टाचारी नेता भी चुनाव लड़ते हैं। हमें किसी भी गलत चीज के प्रति विरोध करने की आदत डालनी होगी। जब तक हम विरोध नहीं करेंगे, तब तक भ्रष्टाचार ऐसे ही फैलता रहेगा। हमें हर एक धोखाधड़ी की सूचना भ्रष्टाचार निरोधक विभाग को देनी होगी क्योंकि पहले व्यक्ति छोटी रिश्तखोरी करता है और फिर उसका लालच बढ़ता जाता है और वह बड़े-बड़े घोटालों को अंजाम देने लग जाता है। हमें अपने अधिकारों के प्रति सजग रहना होगा क्योंकि आधे से ज्यादा भ्रष्टाचार तो हमें हमारे अधिकार नहीं पता होने के कारण ही हो जाते हैं।

**उपसंहार :-** भ्रष्टाचार हमारे नैतिक जीवन मूल्यों पर सबसे बड़ा प्रहार है। भ्रष्टाचार से जुड़े लोग अपने स्वार्थ में अंध होकर राष्ट्र का नाम बदनाम कर रहे हैं। आज भ्रष्टाचार कुछ इस प्रकार से भारत में बढ़ चुका है कि कहीं-कहीं तो भ्रष्टाचार के बिना काम ही नहीं होता है। भारत जैसे विकासशील और लोकतांत्रिक देश में भ्रष्टाचार का होना एक बहुत ही बड़ी विडंबना है। हमारा राष्ट्रीय चरित्र धूमिल होता नजर आ रहा है, जो कि हमारे देश पर कीचड़ उछालने से कम नहीं है। हमारा नैतिक स्तर इतना गिर गया है कि हम अन्यो लोगों के बारे में जरा भी नहीं सोचते हैं। हमारा देश सत्य, अहिंसा, कर्मठ, शीलता और सांस्कृतिक मूल्यों के लिए जाना जाता था, लेकिन आज 21वीं सदी के भारत में यह सब चीजें देखने को नहीं मिलता है। भ्रष्टाचार का कैसर हमारे देश के स्वास्थ्य को नष्ट कर रहा है। यह आतंकवाद से भी बड़ा खतरा बना हुआ है। अगर हमें भ्रष्टाचार को जड़ से समाप्त करना है तो राजनेताओं, सरकारी तंत्र और जनता को साथ मिलकर इसके खिलाफ लड़ना होगा तभी इस भ्रष्टाचार रूपी दानव से हम अपने देश को बचा सकते हैं।

भ्रष्टाचार है एक बीमारी,

दण्डित हो हर भ्रष्टाचारी। □

## अंतर्दर्शन

✍ प्रतीक बरुआ  
मुख्य अभियंता (गैस प्रबंधन सेवाएं)  
कॉम्प्रेसर मेंटेनेंस अनुभाग  
गैस प्रबंधन सेवाएँ विभाग, दुलियाजान

कितना कठिन हैं अच्छा इंसान बनना ?  
पार्थिव प्रलोभनों के आगे अपना ईमान ना बेचना ?  
क्या सच में दुष्कर है अच्छाई की डोर थामना ?  
खुदकी त्रुटियों को जग के सामने छिपाना ?  
शायद असाध्य है अपनों से मुंह मोड़ना  
अपनी तरक्की की निमित्त रिश्तों से दूर भागना  
पर क्या वाकई कठिन है निःस्वार्थ बनना ?  
योग्यता को उसका यथोचित सम्मान दिलाना ??  
सम्भवतः सहज है हर क्षण निष्पक्ष रहना  
अपना लक्ष भेदने की चाह में हर एक अवरोधक इंसान को हटाना !!  
लेकिन क्या वस्तुतः दुःसाध्य है सच्चा मार्गदर्शक बनना ?  
सक्रिय अनुजों को रौंदने की जगह, एक सही राह दिखाना ??  
कदाचित्त जटिल है अपना दंभ अंकुशित करना ...  
किसी और की उत्कृष्टता को सार्वजनिक स्वीकार करना !  
लेकिन क्या सचमुच मुश्किल है विनम्रता से व्यवहार करना ?  
अपनी हर चूक को बेझिझक ग्रहण करना ??  
दरअसल नहीं है कठिन एक सरल जीवन बिताना ...  
अभिसंधि-रहित परोपकारी कर्मों से समाज हितैषी की भूमिका निभाना...  
परन्तु मोह के चक्रव्यूह में मनुष्य करता सही गलत की अवहेलना !!  
और पक्षपात तथा विद्वेष मुक्त मानव जाति की अपेक्षा...? रह जाती  
बस एक कल्पना !!! □

## नरगिस के फूल

(Daffodils by William Wordsworth)

✍ अनुवाद: अजय दास  
कनिष्ठ कार्यालय सहायक - 2 (एचआरई)  
मानव संसाधन अधिग्रहण विभाग, दुलियाजान

मैं अकेला बादल सा भटक रहा था,  
ऊँचे पहाड़ों और घाटियों के पार।  
  
तभी अचानक मुझे दिखा एक दृश्य सुहाना,  
झील के किनारे, पेड़ों की छाया तले निराला।  
  
हजारों नरगिस के फूल, एक पंक्ति में खिले,  
जैसे तारे हों आकाशगंगा में मिले।  
  
वे झील की लहरों संग थिरक रहे थे,  
मंद पवन में मुस्कुरा-झूम रहे थे।  
  
लहरें भी नाचती थीं पास बहती हुई,  
पर नरगिसों की मस्ती सबसे बढ़ती हुई।  
  
कवि का हृदय हर्षित हो उठा,  
उस सौंदर्य को देखकर हर्ष से भर उठा।  
  
मैं देखता रहा, देखता ही रह गया,  
पर उस क्षण की क्रीमत तब समझ में आया।  
  
क्योंकि जब भी मैं अकेला होता हूँ,  
या किसी गहन सोच में डूबा होता हूँ।  
  
वे फूल मन में पुनः प्रकट हो जाते हैं,  
मेरे हृदय को आनंद से भर जाते हैं।  
  
और तब - मेरी आत्मा नाचने लगती है,  
नरगिसों के संग - आनंद में डूब जाती है। □

## माँ

✍ भवानी प्रसाद श्रीवास्तव  
अधीक्षण अभियंता (कूप संलेखन)  
कूप संलेखन विभाग, दुलियाजान

आज लिखने की कुछ मेरी चाहत हुई है,  
दिल में बस उनकी ही बादशाहत हुई है।  
याद आई है आज उनके आंचल की छांव,  
उनके हृदय का स्पर्श, और मनाने के दाँव।

अब तो आप समझ गए होंगे  
मैं किसका जिक्र कर रहा हूँ।  
बड़ा अकेला हूँ मैं, अपनी माँ  
की फ़िक्र कर रहा हूँ।

याद आए हैं वो दिन, जब हम छोटे हुआ करते थे,  
रोते थे, हंसते थे, माँ - माँ कहा करते थे।  
जब अपने नन्हे अधरो को खोला था,  
माँ वो शब्द है शायद जो पहले बोला था।

माँ के हृदय का स्पर्श, हमने पहचान लिया था,  
तभी तो कोई और गोद में ले तो रोना ठान लिया था।  
वो माँ है जिसने खुद को तपाया था,  
अपने आंचल में छिपाकर हमें चैन से सुलाया था।

माँ ममता की मूर्त, ईश्वर का दूसरा जन्म है,  
माँ, उसके बारे में जितना कहा जाए उतना कम है।  
वो माँ ही है, जिसने हम पर कभी एहसान नहीं किया,  
स्वयं परेशान रही लेकिन, कभी परेशान नहीं किया,  
स्वयं परेशान रही लेकिन, कभी परेशान नहीं किया। □

## मैं

✍ डॉ. कमलाक्षी देवी  
उप मुख्य जैव प्रौद्योगिकीविद  
अनुसंधान एवं विकास विभाग, दुलियाजान

मैं, एक माँ एक पत्नी एक बेटी,  
एक ही समय में तीनों किरदार निभाती हुई,  
कभी खुद से खफ़ा, कभी खुश होती हुई।

दिन रात सबकी शिकायत सुनती हुई,  
उन की समस्या का समाधान करती हुई,  
कोई मुझसे भी पूछे "तू कैसी है? थोड़ा आराम किया की नहीं?"  
कोई मुझे भी समझे यही आस लगाती हुई....  
मैं, एक माँ एक पत्नी एक बेटी,  
एक ही समय में तीनों किरदार निभाती हुई,  
कभी खुद से खफ़ा, कभी खुश होती हुई।

ऑफिस में बॉस की सुनो  
और घर पर घरवालों की,  
कोई कभी मेरी भी सुन ले यही आस लगती हुई,  
किसी का भी दिल न दुखे यही सोचती हुई  
उनके ख्वाहिशो के बीच  
अपने सपनों को खोती हुई.....  
मैं, एक माँ एक पत्नी एक बेटी,  
एक ही समय में तीनों किरदार निभाती हुई,  
कभी खुद से खफ़ा, कभी खुश होती हुई।

ऑफिस, घर बच्चा सब कुछ ही संभालती हुई,  
"मैं तो स्ट्रांग लेडी हूँ" - खुद को यह समझाती हुई,  
सबकी जिम्मेदारी निभाते निभाते  
खुद के लिए कभी वक्त मिलती नहीं,  
मैं, एक माँ एक पत्नी एक बेटी  
एक ही समय में तीनों किरदार निभाती हुई  
कभी खुद से खफ़ा, कभी खुश होती हुई। □

## ये खाली गलियां

✍ स्वप्निल कुलश्रेष्ठ

वरिष्ठ अधिकारी (ओजीपीएस)

ओजीपीएस विभाग, दुलियाजान

ना वो लुक्का छुप्पी का खेल  
 ना वो चैन कुली की रेल  
 ना वो खेल खेल में थप्पी  
 ना वो दोस्तों की प्यार भरी झप्पी  
 अब है ही कहां अब है ही कहां।  
 वो शामों के शोर हैं ही कहां  
 वो गलियों के खेल है ही कहां  
 कहीं खो गई है महफिलें शामों की  
 कहते थे सब जिन्हें शैतान  
 उनकी टोलियां है ही कहां।  
 खेलते है खेल आज भी शामों को  
 शायद वो गलियां ही कही खो गई हैं  
 करते है वो आज भी शैतानियां  
 पर शायद वो किताबों में कहीं सो गई हैं।  
 सोचो तो जरा बदला ही क्या है  
 बच्चे, पढ़ाई, परीक्षाएं या ये माहौल  
 पर कुछ भी हो बहुत सी बचपन की कहानियां  
 बनने से पहले ही कही गुम हो गई है। □

## बोहाग (बैशाख) में दुलियाजान

✍ मोहित शर्मा

मुख्य प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

ई एंड डी निदेशालय

बोहाग की पहली किरण जब धरती को छूती है,  
 दुलियाजान की गलियां चुपचाप मुस्कुराती हैं।  
 तेल की खुशबू में धुली है मिट्टी की बात,  
 हर पेड़, हर पत्ता कहता है अपनी सौगाता  
 पीले गुलमोहर, लाल पलाश की छाया,  
 बैंगनी फूलों ने जैसे आसमान को छू लिया।  
 हवा में बसा है कोई पुराना गीत,  
 जो हर सुबह कानों में धीरे से बुनता है प्रीता  
 चाय बागानों की पगडंडियां जागती हैं,  
 और सूरज की किरणें उन पर नृत्य करती हैं।  
 यहाँ की हर सुबह एक चित्रकार की कल्पना है,  
 हर मोड़, हर पेड़ जैसे कविता की पंक्ति बना है।  
 दुलियाजान, जहाँ काम और प्रकृति साथ चलते हैं,  
 जहाँ मशीनों की धड़कन भी फूलों से मिलते हैं।  
 कभी लगता है जैसे विदेश की कोई घाटी हो,  
 पर यह तो अपना ही शहर है, अपनी ही माटी है। □

## हिंदी भाषा

✍ डॉ. नवनीत स्वरगिरी

उप महाप्रबंधक (चिकित्सा सेवाएँ-दंत चिकित्सा)

चिकित्सा विभाग, दुलियाजान

हिंदी भाषा, दिलों की बात,  
 हर शब्द में बसी है सौगाता  
 गर्व से बोलो, गर्व से कहो,  
 यह हमारी पहचान, यह हमारी जान।  
 संस्कृति की नयी राह में,  
 हिंदी है हर दिल की सच्चाई।  
 संवेदनाओं को बयां करने की,  
 इसने की है भरपाई।  
 सपनों की भाषा, ताज की धारा,  
 हिंदी में छिपा हर रंग है हमारा।  
 संस्कृत से जुड़ी, पर अजनबी नहीं,  
 हिंदी है हमारी, दिल से प्यारी, यह जानो सभी। □

## स्वच्छ भारत

✍ ऋतु कुमारी

कार्यालय सहायक-2 (निगमित योजना)

योजना विभाग, नोएडा

अपनी देशभक्ति दिखाने का वक्त आ गया  
मातृभूमि का कर्ज चुकाने का वक्त आ गया  
सरहद पर गोली खाना ही सिर्फ देशप्रेम नहीं होता  
तिरंगे में लिपटने का सब को सौभाग्य नहीं मिलता  
देश की स्वच्छता में,

अपनी भूमिका निभाने का वक्त आ गया  
मातृभूमि का कर्ज चुकाने का वक्त आ गया।

जैसे बाहरी शत्रुओं से भारत माँ की रक्षा जरूरी है  
अस्वच्छता को भी, घातक शत्रु मानने की बारी है  
भारत माँ की आँचल पर, यह सबसे बदनुमा दाग है।  
गाँव, शहर और जलाशयों में कचरे का अम्बार है  
जन आंदोलनों के जरिए, चलो जागरूकता फैलाते हैं,  
सड़कों पर कूड़ा ना फैलाएँ आओ मिलकर प्रण उठाते है  
गाँधी के स्वच्छ भारत का सपना  
साकार करने का वक्त आ गया,  
सैनिक, शिक्षक और चिकित्सक की तरह  
सफाई कर्मचारियों का सम्मान करें।

जो गली चौराहे, दीवारों पर थूकें,  
कानून भी ना उसे माफ करे,  
सार्वजनिक स्थानों पर, कूड़ेदान की उचित व्यवस्था हो  
पर्यावरण को साफ रखें, यदि ईश्वर की सच्ची आस्था हो,  
सारे जहाँ से अच्छा हिन्दूस्तान, बनाने का वक्त आ गया  
मातृभूमि का कर्ज चुकाने का वक्त आ गया।

कितनी जंगे जीती है हमने, बारूद बंदूक तलवारों से  
अस्वच्छता को भी हराएँ झाड़ू रूपी हथियारों से,  
गिरा हुआ कागज का टुकड़ा,  
उठाने में ना कोई शर्मिंदगी हो  
साफ, स्वच्छ और खुशनुमा हिन्दूस्तानियों की जिंदगी हो  
सरहद पर तैनात सैनिक  
समर्पित है भारत माँ के चरणों में,  
हम भी तो कुछ अर्पण करे भारत माँ के चरणों में  
अस्वच्छता के विरुद्ध युद्ध लड़ने का वक्त आ गया  
मातृभूमि का कर्ज चुकाने का वक्त आ गया।  
जय हिन्दा।

जय भारता। □

## आओ मिलकर

✍ सुप्रियो भट्टाचार्य

कनिष्ठ कार्यालय सहायक -1 (योजना)

योजना विभाग, दुलियाजान

आओ मिलकर देश भक्ति का गीत गाये हम,  
देश का नया विकास करे हम ॥  
चलो मिलकर नवयुग का नया सूरज लाये हम,  
क्रांति तथा ज्ञान का प्रकाश फैलाएँ हम,  
भाईचारे का महत्व बताएँ हम,  
आजादी का नया जश्न मनाएँ हम ॥  
शत्रु को भी बंधु बनाएँ हम,  
पूरे संसार में प्रेम का संदेश फैलाएँ हम।  
और दुश्मनी का नामो निशान मिटाएँ हम ॥ □

## ऑयल की अध्यक्षता में नराकास, दुलियाजान की 46वीं बैठक संपन्न

ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान की अध्यक्षता में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दुलियाजान की 46वीं बैठक 29 अक्टूबर 2024 को तेजस सम्मेलन कक्ष, केन्द्रीय अग्निशमन केन्द्र, ऑयल इंडिया लिमिटेड, दुलियाजान में सफलतापूर्वक संपन्न हुई। श्री माधुर्ज्य बरुआ, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं क्षेत्र प्रशासन), ऑयल की अध्यक्षता में आयोजित उक्त बैठक में श्री राजीव कुमार नायक, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर), गुवाहाटी, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्री देवाशीष बोरा, मुख्य महाप्रबंधक (क्षेत्र प्रशासन), ऑयल श्री दिगंत डेका, अधिकारी (राजभाषा), ऑयल एवं सदस्य-सचिव (नराकास-दुलियाजान) उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त दुलियाजान और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में क्षयित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों और बैंकों के विभागाध्यक्षों एवं राजभाषा अधिकारियों/प्रभारियों ने बैठक में उपस्थित होकर अपनी सरिरीय सहभागिता सुनिश्चित की।



## ऑयल की अध्यक्षता में नराकास, दुलियाजान की 47वीं बैठक सफलतापूर्वक संपन्न

ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान की अध्यक्षता में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दुलियाजान की 47वीं बैठक दिनांक 28 मई 2025 को ऑयल इंडिया लिमिटेड के क्षेत्र सम्मेलन कक्ष में सफलता पूर्वक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता श्री माधुर्ज्य बरुआ, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं क्षेत्र प्रशासन), ऑयल ने की। यह बैठक क्षेत्र में राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन को बढ़ावा देने में एक और मील का पत्थर साबित हुई।



इस अवसर पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर), गुवाहाटी से श्री देवानंद दास, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित रहे। साथ ही श्री दिगंत कुमार बोरा, महाप्रबंधक (जन संपर्क), ऑयल, श्री दिगंत डेका, वरिष्ठ अधिकारी (राजभाषा), ऑयल एवं सदस्य-सचिव, नराकास-दुलियाजान भी उपस्थित थे।

कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और बैंकों के विभागाध्यक्षों, राजभाषा अधिकारियों और प्रभारियों की सक्रिय भागीदारी देखी गई, जो हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है। श्री दिगंत कुमार बोरा, महाप्रबंधक (जन संपर्क), ऑयल ने उपस्थित सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। इसके साथ ही नराकास, दुलियाजान की 47वीं बैठक का विधिवत समापन हुआ।

## ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर "प्रथम राजभाषा शील्ड" से सम्मानित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर को राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जोधपुर क्रमांक एक (1) के द्वारा 'क' वर्ग के कार्यालयों की श्रेणी के अंतर्गत "प्रथम राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया गया। उक्त राजभाषा शील्ड को उत्तर पश्चिम रेलवे, जोधपुर के सम्मानित मंडल रेल प्रबंधक एवं अध्यक्ष नराकास, श्री पंकज सिंह के कर कमलों द्वारा दिनांक 27 नवम्बर 2024 को रेल भवन, जोधपुर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान प्रदान किया गया। चल वैजयंती राजभाषा शील्ड वर्ष 2023-24 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रदत्त है। आप सभी को सहर्ष सूचित करना चाहते हैं। ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर चल वैजयंती राजभाषा शील्ड का विगत चार वर्षों से लगातार विजेता या उप विजेता रहा है।



## संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा ऑयल इंडिया लिमिटेड, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी का निरीक्षण

दिनांक 11.04.2025 को संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा ऑयल इंडिया लिमिटेड, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी का निरीक्षण किया गया। गुवाहाटी स्थित होटल रेडिसन ब्लू के सम्मेलन कक्ष में पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में हो रही राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति का निरीक्षण करते हुए उप समिति के कार्यकारी अध्यक्ष एवं संयोजक माननीय डॉ. दिनेश शर्मा (संसद सदस्य- राज्यसभा) तथा समिति के अन्य माननीय सदस्यों- श्री मती माला राज्यलक्ष्मी साह (संसद सदस्य- लोकसभा), श्री राम चन्द्र जांगडा (संसद सदस्य- राज्यसभा), श्री कल्याण बनर्जी (संसद सदस्य- लोकसभा), श्री मती कृति देवी देवबर्मन (संसद सदस्य- लोकसभा), श्री सतपाल ब्रह्मचारी (संसद सदस्य- लोकसभा), श्री विश्वेश्वर हेगड़े कागेरी (संसद सदस्य- लोकसभा), डॉ. अजित माधवराव गोपछड़े (संसद सदस्य- राज्यसभा), श्री किशोरी लाल (संसद सदस्य- लोकसभा) ने ऑयल इंडिया लिमिटेड के द्वारा किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की। संसदीय राजभाषा समिति की ओर से श्री प्रेम नारायण, श्री इरफान अहमद खान, श्री सहदेव सिंह, श्री अनुप साव सहित अन्य अधिकारी सम्मेलन कक्ष में उपस्थित थे। ऑयल इंडिया लिमिटेड का प्रतिनिधित्व श्री त्रैलोक्य बरगोहाई, निदेशक (प्रचालन) द्वारा किया



गया तथा बैठक में डॉ. अंकुर बरुआ, निदेशक (मानव संसाधन), श्री ज्योति प्रकाश परमानंद दास, कार्यकारी निदेशक (पाइपलाइन सेवाएं), श्री राजुमोनी सैकिया, महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन), डॉ. रमन जी झा, महाप्रबंधक (राजभाषा), श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) भी शामिल हुए। इसके अतिरिक्त, श्री मती ज्योति मिश्रा, उप निदेशक (राजभाषा) ने पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय, भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में बैठक में भाग लिया।

## ऑयल, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में अखिल भारतीय हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में 22 मार्च 2025 को राजभाषा कार्यान्वयन की एक कड़ी के रूप में एक अखिल भारतीय हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें पाइपलाइन मुख्यालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों एवं उनके परिवारवर्ग तथा नराकास (उपक्रम), गुवाहाटी के कई गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। उक्त कवि सम्मेलन में देश के सुविख्यात कविगण-पद्मश्री सुरेन्द्र दुबे, डां दिनेश बावरा, श्री रोहित शर्मा, सुश्री तिश्याश्री और श्री अंशुमान भूया उपस्थित थे।

हास्य कवि सम्मेलन में उपस्थित कवियों पद्मश्री सुरेन्द्र दुबे, डां दिनेश बावरा, श्री रोहित शर्मा, तिश्याश्री और श्री अंशुमान भूईयां ने हिन्दी और असमिया की वाचिक परंपरा को आगे बढ़ाने में फूहड़ हास्य को दरकिनार करते हुए शुद्ध हास्य तथा तीखे व्यंग्य से अपनी कविताओं और प्रस्तुति का अलंकरण किया। कविताओं में हंसी की फुहार के साथ समसामयिक परिस्थितियों पर ऐसा तीक्ष्ण कटाक्ष देखने को मिला, जो यकायक श्रोता को सोचने पर विवश कर दिया। आपने विखंडित होती संस्कृति, सामाजिक चेतना, राजनीति, महंगाई, पर्यावरण, बुराईयों



आदि तमाम विषयों पर अपने विचारों को रखें और विशेष बात यह है कि इन अति गंभीर विषयों की बात करते समय श्रोताओं को कहीं भी नीरस नहीं होने दिये।

सम्मेलन का संचालन कुमारी नीलम, मुख्य प्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) ने किया। श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हास्य कवि सम्मेलन संपन्न हुआ।

## क्षेत्र संचार विभाग, दुलियाजान में राजभाषा प्राचीर-पत्रिका का उद्घाटन एवं राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान के क्षेत्र संचार विभाग द्वारा राजभाषा अनुभाग के सहयोग से राजभाषा कार्यान्वयन को और अधिक गति प्रदान करने के उद्देश्य से दिनांक 05.07.2025 एक प्राचीर-पत्रिका का उद्घाटन किया गया। श्री गौरांग बरगोहाई, कार्यकारी निदेशक (अभियांत्रिकी सेवाएं), ऑयल की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में श्री दिगंत कुमार गोगोई, महाप्रबंधक (क्षेत्र संचार), श्री तेमजेनमोंबा, उप-महाप्रबंधक (क्षेत्र संचार) श्री दिगंत डेका, वरिष्ठ अधिकारी (राजभाषा) के अतिरिक्त बड़ी संख्या में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री अनिल कुमार गौतम, मुख्य अभियंता (क्षेत्र संचार), ऑयल ने उपस्थित सभी को कार्यक्रम की रूपरेखा तथा उद्देश्य के बारे में अवगत कराया। श्री गौरांग बरगोहाई, कार्यकारी निदेशक (अभियांत्रिकी सेवाएं) ऑयल ने अपने भाषण में राजभाषा के प्रति जागरूकता फैलाने के इस शानदार प्रयास की भूरी-भूरी प्रशंसा की तथा उन्होंने प्राचीर-पत्रिका में लेख प्रस्तुत करने वाले सभी अधिकारियों /कर्मचारियों एवं उनके बच्चों को धन्यवाद दिया तथा इसको आगे भी जारी रखने हेतु सभी से आग्रह किया। श्री दिगंत कुमार गोगोई, महाप्रबंधक (क्षेत्र संचार) ने अपने विभाग में हो रही राजभाषा संबंधी कार्यों के बारे में जानकारी दी तथा भविष्य में भी इसी प्रकार राजभाषा की प्रगति में अपना योगदान देने हेतु सभी से अपील की। श्री दिगंत डेका, वरिष्ठ अधिकारी (राजभाषा), ऑयल ने उपस्थित सभी को संबोधित करते हुए कहा कि ऑयल में राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम एवं सकारात्मक सहयोग है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की प्राचीर-पत्रिका द्वारा हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा उनके बच्चों के हिन्दी



तथा अन्य भाषाओं में साहित्यिक प्रतिभाओं को सामने लाने का यह एक सुन्दर माध्यम है। उन्होंने क्षेत्र संचार विभाग के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह किया कि इसको आगे भी जारी रखें।

कार्यक्रम के दौरान प्राचीर पत्रिका में लेख प्रस्तुत करने वाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों तथा उनके बच्चों को उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों के कर-कमलों द्वारा आकर्षक पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त क्षेत्र संचार विभाग में दिनांक 03.07.2025 को आयोजित हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को भी पुरस्कृत किया गया। श्री अनिल कुमार गौतम, मुख्य अभियंता (क्षेत्र संचार), ऑयल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।



## ऑयल का निगमित गीत

पूरब से हमने जन्म लिया और दिया जग को उजियारा,  
नया सा हो कोई आसमान पहुंचाना कोई हो जहां  
हमें उड़ना है हमें उड़ना है उस नए क्षितिज की ओर

ऑयल इंडिया

अपनी तो मंजिल आसमान की ऊंचाई है  
अपना तो लक्ष्य सदा धरती की गहराई है  
जीत है आदत हमारी, जीत अपनी पहचान है  
हम में हर दिन नया जोश है, हर दिन अपनी नई उड़ान है

हर मंजिल को पाना है कितना भी कठिन हो रास्ता  
हमें गर्व है हम पर के हम है

ऑयल इंडिया, ऑयल इंडिया

नए क्षितिज की ओर, नए क्षितिज की ओर

आपकी जिंदगी के हर पल की ऊर्जा  
हम है ऑयल इंडिया

गीतकार: सतपाल नारंग

म्यूज़िक कंपोज़र: पंकज अवस्थी

लीड मेल सिंगर: जुबिन गर्ग

लीड फ़ीमेल सिंगर: विधि शर्मा

को-सिंगर: अर्चना गोर, दीप्ति परांजपे